www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जनवरी 2017

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

९०वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सौल्लास सम्पन्न

रामलीला मैदान में दिनांक 25 दिसम्बर 2016 को 90वें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारि को सम्मानित करते हुए हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री कन्हैया लाल जी आर्य। मंचस्थ श्री मा. रामपाल जी आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवम् महाशय धर्मपाल जी आर्य, एम.डी.एच. एवम् नेतागण।

गौदान अवसर पर यज्ञ सम्पन्न

श्री कन्हैयालाल जी आर्य उपप्रधान ट्रस्ट आश्रम की प्रेरणा से श्री सुभाष जी कालड़ा सैक्टर-14, गुड़गांव परिवार द्वारा आत्मशुद्धि आश्रम के लिए सुन्दर दुधारू गाय दान में दी गई। इस अवसर पर श्री सुभाष जी धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश देवी आर्या साथ में सुपुत्र श्री प्रशांत जी धर्मपत्नी श्रीमती शिल्पा देवी, स्वामी धर्ममुनि जी, मा. ब्रह्मजीत जी, कर्नल सहरावत जी, श्री सत्यपाल जी आर्य, मा. रामपाल जी आर्य।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

937
श्री सुधांशु जी चावला
688, सैक्टर-4, गुरुग्राम
हरियाणा

938
श्री तरूण जी मनचन्दा
शिवाजी नगर, गुरुग्राम
हरियाणा

939
श्री यशपाल जी
सिंघल रेलवे रोड
बहादुरगढ़

फर्रूखनगर आश्रम के लिए श्री प्रवीण जी सुपुत्र श्री सुबेसिंह जी, निवासी जयहिन्द की ढाणी फर्रूखनगर द्वारा एक वाटर कूलर दान में दिया गया।

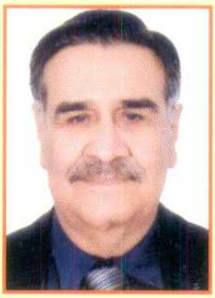

940
श्री सुभाष जी कालड़ा
783, सैक्टर 14,
गुड़गांव

प्रिय बन्धुओं! मास जनवरी में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी फरवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

पौष-माघ सम्वत् 2073 जनवरी 2017

सृष्टि सं. 1972949117 दयानन्दाब्द 193

वर्ष-16) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-1

(वर्ष 47 अंक 1)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
रक्षा करो, रक्षा करो	7
राष्ट्रोन्नति कैसे हो?	8
ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' के सम्बन्ध में.......	9
अधर्म से अर्जित धन के भयंकर दुष्परिणाम	11
कथनी व करणी में अन्तर क्यों	13
स्वतन्त्रता के महान योद्धा नेता जी श्री सुभाष चन्द्र बोस	16
गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार	20
अण्डे मांस मछली	25
आओ आहार-विहार के रहस्य को समझें	27
हंसो और हंसाओ/मुझे बना दो मेरे पिता/एकता	29
ध्यान क्यों नहीं लगता/मैं उसको ढूंढ रहा हूँ	30
भगवान से झाड़ू की प्रार्थना	30
पंचांग के गुलाम	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं राष्ट्र भृत महायज्ञ सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष की भांति गुरु ब्रह्मानन्द आश्रमवणी पुण्डरी जि. कैथल हरियाणा में 23 दिसम्बर शुक्रवार स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90वां बलिदानदिवस रात्रि को उत्साह के साथ मनाया गया एवं 24 दिसम्बर शनिवार प्रातः स्वामी ब्रह्मानन्द जी का 111 कुण्डों में राष्ट्र भृत महायज्ञ के साथ जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी बलेश्वरानन्द जी अध्यक्ष आश्रम रहे। वेद पाठ गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल टीकरी उत्तर प्रदेश के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। अध्य आसन पर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ सुशोभित हुए, स्वामी जी के साथ श्री सत्यपाल जी वत्सार्य उपमन्त्री आश्रम ट्रस्ट और श्री आचार्य विक्रमदेव जी शास्त्री व्यवस्थापक बहादुरगढ़ आश्रम श्री जयपान एवम् श्री रामदेव आर्य रहे। श्री प्रवीण कुमार जी आर्य भजनोपदेशक के मनोहर भजनों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

इस अवसर पर अनेकों श्रद्धालु भक्तों, कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। श्री राजपाल सिंह जी बहादुर व्यवस्थापक द्वारा आश्रम कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से 111 कुण्डीय यज्ञ की और हजारों श्रद्धालु भक्तों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था श्रद्धा के साथ अति उत्तम की गई। कार्यक्रम प्रत्येक प्रकार से सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

गौदान अवसर पर यज्ञ सम्पन्न

श्री कन्हैयालाल जी आर्य उपप्रधान ट्रस्ट आश्रम की प्रेरणा से श्री सुभाष जी कालड़ा सैक्टर-14, गुड़गांव परिवार द्वारा आत्मशुद्धि आश्रम के लिए सुन्दर दुधारू गाय दान में दी गई। 1 जनवरी रविवार सायंकाल पर इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री रवि शास्त्री जी द्वारा यज्ञ करवाया गया। श्री सुभाष जी धर्मपत्नीश्रीमती सुदेश देवी आर्या साथ ही सुपुत्र श्री प्रशांत जी धर्मपत्नी श्रीमती श्रीमती शिल्पा देवी सहित यजमान आसनों पर सुशोभित हुए। अत्यन्त श्रद्धा भक्ति के साथ यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री कन्हैया लाल जी आर्य द्वारा परिवार का परिचय दिया गया। आश्रम के छात्रों द्वारा स्वागत गीत और प्रभुभक्ति का भजन सुनाया गया। श्रीमती सुदेश कालड़ा यजमान ने भी सुन्दर भजन सुनाया और श्री सत्यानन्द जी प्रधान ट्रस्ट, श्री सत्यपाल जी वत्स, उपमन्त्री ट्रस्ट, श्री रामपाल जी आर्य, मा. ब्रह्मजीत जी आर्य द्वारा आर्य समाज वैदिक धर्मप्रचार तीव्रता से करने पर विचार रखे। श्री स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा बहादुरगढ़ और फर्रूखनगर दोनों आश्रमों में 2017 में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी गई और मंच संचालन किया गया। कार्यक्रम 4 से 6.30 बजे तक चला। श्री विक्रमदेव जी शास्त्री आश्रम व्यवस्थापक द्वारा सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई।

जन्मदिवस पर जर्सियां वितरण

श्री भगतसिंह जी श्रीमती सुरेखा देवी जी तिहाड़ कलां, सोनीपत द्वारा अपने सुपुत्र आयुष्मान मुदित का 9वां जन्मदिवस शनिवार 17 दिसम्बर 2016 सायं आत्मशुद्धि आश्रम की भव्ययज्ञशाला में यज्ञ सत्संग के साथ अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। श्रीमती विमला सिंघल द्वारा बधाई गीत गाया गया। श्री वा. पुरुषार्थ मुनि जी द्वारा आशीर्वाद व शिक्षा प्रद उपदेश दिया गया। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा जन्मदिवस एवं जीवन निर्माण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यजमान परिवार को शुभकामनाओं के साथ आशीर्वाद दिया गया। परिवार द्वारा आश्रम के सभी बच्चों के लिए स्कूल की ड्रेस, गर्म जर्सियां प्रदान की गई और सुन्दर प्रसाद वितरण किया गया। जन्मदिवस कार्यक्रम की सर्वव्यवस्था आयुष्मान मुदित के मामा राजवीर जी आटा चक्की वाले धर्मविहार बहादुरगढ़ द्वारा की गई।

www.thearyasamaj.org

महात्मा प्रभु आश्रित अर्धनिर्वाण शताब्दी समारोह

दिनांक 16 मार्च, 2017 वीरवार से 19 मार्च 2017 रविवार तक

स्थानः वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

आप सभी यज्ञ प्रेमी साधकों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आश्रम ट्रस्ट ने पूज्य महात्मा जी के निर्वाण के 50 वर्ष पूरे होने पर अर्ध शताब्दी समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाने का निर्णय लिया है जिसकी अध्यक्षता स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती करेंगे।

विशेष आकर्षण

1. 21 कुण्डीय यज्ञ जिसमें यजमान स्थायी होंगे।
2. योग साधना-प्रातः और सायं स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी द्वारा।
3. सम्मान समारोह महात्मा जी के निकट सहयोगी भक्तजनों का। कृपया आप परिचित भक्तों के बारे में शीघ्रता से मोबाईल नम्बर द्वारा सूचित करें।
4. यज्ञ योग ज्योति विशेषांक आप 31 जनवरी 2017 तक अपने लेख विशेषता महात्मा जी की प्रेरणा, स्मृतियों आदि के बारे में भेजें।
5. पत्रिका के विशेषांक हेतु आप अपने परिवार/प्रतिष्ठान का विज्ञापन अवश्य देकर सहयोग करें। विज्ञापन दर-पूरा पृष्ठ 2000/- आधा पृष्ठ 1000/- होगा।

सम्पर्क करें: शशि मुनि,प्रबन्धक

मो. 9899364721, फोन-01262-253214

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का भव्य शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) का शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 18,19 फरवरी 2017 को किया जायेगा। जिसमें आर्य जगत के प्रमुख विद्वान संन्यासी एवं राजनैतिक नेता पधार रहे है। इन तिथियों में अपना कोई कार्यक्रम न रखें। संगठन का परिचय देते हुए परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारने का कष्ट करें।

निवेदक

रामपाल आर्य	कन्हैया लाल आर्य	योगेन्द्र आर्य
प्रधान	उपप्रधान	मन्त्री

श्री बंसी लाल चावला दिवंगत

आर्य समाज शिवा जी नगर गुरुग्राम के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री बंसी लाल चावला जी 85 वर्ष की आयु प्राप्त कर 4 दिसम्बर 2016 को अन्तिम सांस ली। वह अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा देवी एवं पुत्र श्री दिनेश चावला एवं तीन पुत्रियां श्रीमती आशा, श्रीमती शशी एवं श्रीमती मंजु जी को छोड़कर गये हैं। श्री बंसी लाल चावला जी के जीवन में सब से बड़ा दुःख उनके बड़े पुत्र श्री रमेश चावला जी का निधन था परन्तु उनकी पुत्र वधु श्रीमती सुनीता चावला ने एक पुत्र के समान कर्तव्यों का निर्वाह किया और अपने पति की भावनाओं के अनुकूल अपने पुत्र श्री सुधाशं एवं सुपुत्री मान्ती का पालन पोषण अच्छे ढंग से किया। श्री चावला जी कई वर्षो तक आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय गुरुग्राम के कोषाध्यक्ष भी रहें। वे आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के अच्छे सहयोगियों में रहे हैं। उनके निधन से आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता, ट्रस्टी एवं अधिकारीगण हार्दिक दुःख व्यक्त करते हुए परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार जनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

कन्हैया लाल आर्य

आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट के उपप्रधान श्री कन्हैया लाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के भी उपप्रधान बने। आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव में श्री रामपाल आर्य जी प्रधान, श्री कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान निर्वाचित हुए। इसके अतिरिक्त मन्त्री श्री योगेन्द्र आर्य, उपमन्त्री, श्री उमेद शर्मा, कोषाध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा आर्या एवं पुस्तकाध्यक्ष, श्री आजाद सिंह बने। स्मरण रहे श्री मा. रामपाल आर्य का पूरा पैनल चुनाव जीत गया।

www.thearyasamaj.org

फर्रूखनगर आश्रम का मासिक यज्ञ सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम का मासिक यज्ञ सत्संग रविवार 11 दिसम्बर 2016 को उत्साह और श्रद्धा के साथ प्रात: 8 से 1 बजे तक सम्पन्न हुआ।

यज्ञ आचार्य प्रवीण शास्त्री और विक्रमदेव शास्त्री दोनों शास्त्रियों द्वारा करवाया गया। यजमान आसनों को भूमिदाता वा. ईशमुनि जी श्रीमती वेद कौर और उनके सुपुत्र श्री हरिओम् सपत्नीक श्रीमती मुकेश देवी जी सपरिवार सुशोभित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कला दिल्ली द्वारा की गई। वा. विश्वमुनि जी बृ. वृज मोहन ब्र. विपिन्न श्री सुखपाल आर्य बहादुरगढ़ आश्रम के ब्रह्मचारियों के भजनों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। श्री जगवीर सिंह जी आर्य शाहबाद दिल्ली मुख्य वक्ता के प्रभावशाली व्याख्यान के साथ आचार्य मुसूदीलाल जी, मुकेश शास्त्री जी, श्री ईश मुनि जी, श्री जयनारायण जी एडवोकेट आदि द्वारा स्व.स्व. सुन्दर विचार रखे। श्री चांद सिंह आचार्य द्वारा मंच संचालन, आश्रम की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए अपने हार्दिक भाव प्रकट किये। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा सभी वक्ताओं श्रोताओं, कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद के साथ दोनों आश्रमों के कार्यक्रमों का निमन्त्रण दिया गया। आगमी सत्संग 8 जनवरी 2017 के प्रथम सत्संग में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए प्रेरित किया गया। इस शुभ अवसर पर सत्संग मध्य श्री रमेशदराल टीकरी दिल्ली, चौ. ईश्वर सिंह, राजेशार्य न्यू पालम विहार, श्री रामफल जी दहिया, श्री कृष्ण जी धन्खड़, श्री चतुर्भुज जी बंसल, श्री महेश जी, श्री सुधीर जी, प्रधान श्री जागेराम जी शाहबाद, श्री विक्रम जी युवा प्रधान फाजिलपुर, श्री रामकिशन जी, श्री राम निवास जी, सरपंच खेड़ा खुर्रमपुर, श्री राजवीर शास्त्री आदि अनेकों गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सत्संग का लाभ उठाया गया और सभी कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाया गया। शान्ति पाठ के पश्चात श्री वा. ईशमुनि जी यजमान परिवार द्वारा स्वादिष्ट सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई।

टेंशन से सावधान

आज ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति टेंशन सें ग्रस्त है जिसको देखो टेंशन में है छोटा हो या बड़ा सभी लोग इस बीमारी की चपेट में हैं। हम टेंशन कुछ बेकार की बातों की अपने आप ले लेते हैं जरा सी बात घर में हो जाये, पति टेंशन में आ जाता है या पत्नि टेंशन में आ जाती है आजकल टेंशन की बीमारी ने काफी लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। हम लोग किसी भी बात को बड़ी गहराई से सोचते हैं और फिर बेकार की टेंशन मोल ले लेते हैं पड़ौसी से कोई बात हो गई तो टेंशन, बच्चों से कोई बात हो गई तो टेंशन अगर किसी से कोई भी बात नहीं हुई फिर भी टेंशन ऑफिस में जरा से कोई बात हो गई, या बॉस से कोई बात हो गई तो टेंशन, हम बेवजह टेंशन को पाले हुये हैं अगर हमें अपने जीवन को सही ढंग से चलाना है तो हमें टेंशन से दूर रहना होगा। टेंशन एक ऐसी बीमारी है जिसका इलाज नहीं है आप छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान न दें हमेशा हंसते और मुस्कराते रहें जीवन बहुत अमूल्य है हमें अपने समय को अच्छे विचारों में अच्छे कामों में लगाना है। इधर-उधर बातों में अपना समय न गवायें, अपनी जरूरतों को कम करें, ज्यादा लोगों से बात न करें, जितना ज्यादा जरूरतों को बढ़ायेगे, उतना ज्यादा टेंशन हमें होगी। अपने विचारों को धार्मिक और सकारात्मक रखें, लड़ाई झगड़े का माहौल न बनायें, बेकार की बातों को तूल मत दो, हमें कोई टेंशन नहीं दे सकता, हम स्वयं ही टेंशन खरीदते हैं, बेवजह हर मामले में टांग अड़ाना, बेकार की बहस करना इन सभी बातों को छोड़कर अपने बच्चे अपना परिवार पर विशेष ध्यान दें बाकी सब छोड़ दीजिए आपका जीवन सुखमय और खुशहाल बन जायेगा।

- 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा), मो. 9968460312

www.thearyasamaj.org

वेद सन्देश

रक्षा करो, रक्षा करो

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पाहि नो अग्ने रक्षसः, पाहि धूर्तेरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो, बृहद्भानो यविष्ठ्य॥

ऋग् 1.36.15

ऋषि:**कण्वःघौरः**। देवता **अग्निः**। छन्द:**बृहती**।

(**बृहद्भानो**) हे महान् तेजवाले, (**यविष्ठय**) तरूणतम (**अग्ने**) अग्रणी परमात्मन्। (**रक्षसः**) राक्षस से (**नः**) हमारी (**पाहि**) रक्षा कर, (**धूर्तेः**) हानिकारक (**अराव्णः**) आदानशील कृपण से (**पाहि**) रक्षा कर, (**रीषतः**) हिंसक से (**उतवा**) और (**जिघांसतः**) वधेच्छु से (**पाहि**) रक्षा कर।

समाज में जब राक्षसों का उपद्रव बढ़ जाता है, तब सज्जनों का जीवन और उनके द्वारा किये जानेवाले धर्म-कर्म संकट में पड़ जाते हैं। वे दुष्ट, दस्यु, पापात्मा लोग राक्षस कहाते हैं, जिनसे सबको अपनी रक्षा करने की चिन्ता हो जाती है, या जो एकान्त पाकर अपना घात लगाते हैं। चोर, डाकू, लुटेरे, गिरहकट, तस्कर, व्यापारी आदि इसी श्रेणी के लोग होते हैं। समाज में कुछ व्यक्ति 'अरावा' अर्थात् अदानशील और कृपण प्रवृत्ति के होते हैं। ये लोग धन को अपने पास बटोरकर रख लेते हैं, जिससे समाज में आर्थिक विषमता उत्पन्न हो जाती है। आर्थिक विषमता को दूर करने का वैदिक उपाय दानशीलता ही है। पर जब कृपण (अरावा) लोगों की संख्या बढ़ने लगती है, तब ये लोग देश और समाज के लिए बड़े हानिकर और अभिशाप रूप सिद्ध होते हैं। तीसरे कुछ लोग हिंसा की प्रवृत्ति वाले होते हैं, जो हत्या-रूप महापाप करने में आनन्द लेते हैं। ये धनादि के लोभ में शिशुओं, तरूणों, युवतियों का वध कर देते हैं और एक हत्या करके दूसरी हत्या की योजना तैयार करते रहते हैं। ये सब लोग समाज के वातावरण को दूषित करनेवाले हैं। राजशास्त्रकारों ने इनके लिए राजदण्ड का विधान किया है।

हे अग्ने! हे अग्रणी परमात्मन्! तुम 'बृहद्भानु' हो, अग्नि-ज्वालाओं से भी अधिक तुम्हारा महोतेज है। तुम 'यविष्ठ्य' हो, युवतम हो, अतिशय तरूण एवं बलवत्तम हो। अतः तुम उपर्युक्त सब अवांछित लोगों से हमारी रक्षा करने में समर्थ हो। पर हम यह नहीं चाहते कि हम हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहें और तुम आकर हमारी रक्षा कर जाओ। जब हम तुमसे यह प्रार्थना करते हैं कि तुम 'राक्षस' से, 'अरावा' से, हिंसक से और हिंसा का मन्सूबा बांधनेवाले से हमारी रक्षा करो, तब हमारा यही आशय है कि तुम हमें भी अपने जैसा तेजस्वी और नित्य-तरूण बना दो, जिससे हम दुर्जनों से अपनी और अपने समाज की रक्षा कर सकें। हमें तुम इनका प्रतिरोध करने की, इन्हें पराजित करने की और इनका समूल उन्मूलन करने की शक्ति दो और इससे भी बड़ी वह दिव्य शक्ति दो कि हम इनकी राक्षसी वृत्ति को, कृपणता को और हिंसा प्रवृति को नष्ट कर इन्हें भी अपने जैसा धर्मात्मा बना लें, जिससे दुष्टता का नग्न ताण्डव हमारे समाज से सदा के लए मिट जाए और हम पवित्रता के वातावरण में श्वास ले सकें। **- वेद मञ्जरी**

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507, चलभाष : 09416054195

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रोन्नति कैसे हो?

सम्पादकीय

26 जनवरी। फिर गणतन्त्र दिवस आ गया।

देशवासियो! आओ मिल बैठकर विचार करें कि राष्ट्र किस प्रकार उन्नति कर सकता है।

हमारा अपना दृष्टिकोण है। जिस राष्ट्र के नायक शोषक नहीं सर्वपोषक होंगे, दुराचारी नहीं सदाचारी होंगे, विलासी तथा भोगी नहीं संयमी होंगे और स्वार्थी नहीं परोपकारी होंगे, वह राष्ट्र सदैव उन्नति को प्राप्त होगा। वहां सुख और शांति की वृष्टि होगी।

किन्तु क्या ऐसा हमारे यहां है? समाचार पत्र आप भी पढ़ते होंगे। क्या पढ़ते हैं? भ्रष्टाचार, घोटाले, हिंसा तथा हर प्रकार के शोषण के किस्से। फिर कैसे राष्ट्र उन्नति करेगा? कहां से बरसेगी शांति और सुख?

फिर जगह-जगह राष्ट्र बँटा हुआ दीख रहा है। दलों में दल हैं दो प्रकार के साम्प्रदायिक और राजनीतिक। आगे यह दल क्षेत्रीय, भाषायी और जातिगत आधार पर बंटे हुए हैं। परिणामस्वरूप साम्प्रदायिकता, विघटन और असहिष्णुता का खुल कर प्रचार हो रहा है। ऐसी दुष्ट प्रवृत्तियों का दण्ड हम पहले ही भुगत चुके हैं। देश के बँटवारे के रूप में। साम्प्रदायिकता अथवा राजनीतिक सोच के अनुसार मानव जाति का विभाजन नहीं किया जाना चाहिए। मनुष्य केवल मनुष्य रहे और सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण को लक्ष्य बनाकर पुरुषार्थ होना चाहिए।

क्या हो रहा है कि ये साम्प्रदायिक दल सांस्कृतिक संस्थाओं को चोला धारण कर रहे हैं। किन्तु उनके मूल में साम्प्रदायिकता छिपी रहती है जो अक्सर समय पाकर प्रकट हो जाती है। इसी प्रकार राजनीतिक दल और उनके कुटिल नेता सेवा और लोक कल्याण की आढ़ में अपने-अपने दलों को सुदृढ़ और संगठित कर रहे हैं। लोक कल्याण और तदनुरूप किये जाने वाले पुरुषार्थ के दृष्टिगत, शाश्वत और सार्वभौमिक आधार पर कैसे मानव जाति को कैसे विभाजित किया जाये इसका उल्लेख वेद में है:-

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरूणो मित्रों अर्यमा
मू चिन्स दम्यते जनः॥

मन्त्र में वरूण, मित्र, अर्यमा, प्रचेतस ये चार वर्ग बताए गए हैं जिनमें मानवजाति को कर्म के आधार पर बांटा जा सकता है। आगे चलकर मनु जी ने इन चार वर्गो की पुष्टि चार वर्णो के रूप में की है।

वरूण वे लोग है। जिनके हाथ में दण्ड देने का अधिकार है। शासक, सेना तथा पुलिस वरूण की कोटि में आते हैं। मित्र वे हैं जो आम लोगों के मध्य कार्य करते हैं। व्यापारी, उद्योगपति तथा कृषक ये सभी मित्र हैं। मनु जी ने इन्हें वैश्य बताया है। सबकी सेवा करने वालों को अर्यमा कहा जाता है। मनु जी ने इन्हें शूद्र का नाम दिया है। डॉक्टर, इंजीनियर तथा वकील आदि से युक्त बुद्धिजीवी वर्ग को वेद में प्रचेतस कहा है। मनु जी ने इसको ब्राह्मण वर्ग कहा है।

इन चारों वर्गो को सरल भाषा में शिक्षक, रक्षक, पोषक और सेवक वर्ग कहा जा सकता है।

कर्म के आधार पर विभक्त ये चारों वर्ग अथवा वर्ण पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से यदि अपने कर्तव्यों का पालन करें तो कोई कारण नहीं कि राष्ट्र उन्नति न करे। साम्प्रदायिकता और जातिवाद से संबंधित सभी भेदभावों को मिटाकर तथा संगठित होकर राष्ट्रहित में नव-संकल्प लेना होगा आज के दिन। एकता में बल है। शक्ति ही होनी चाहिए राष्ट्र के निर्माण में। महाभारत में धृतराष्ट्र को उपदेश दे हुए विदुर जी कहते है:-

धूमायन्ते व्यंयतानि ज्वलन्ति सहितानि च।
धृतराष्ट्रोल्युकानीव ज्ञातयो भारतवर्षभ।

क्या अर्थ हुआ। लकड़ी अलग-अलग रहने से धुआं देती है किन्तु मिलकर रहने से जलती है अर्थात् प्रकाश देती है। इसी प्रकार प्राणी पृथक-पृथक सुलगते हैं, एक साथ रहकर प्रदीप्त होते हैं। आओ सब मिलकर परोपकर की भावना से पुरुषार्थ करें।

\- **धर्ममुनि**

> प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। —**विक्रमदेव शास्त्री**

www.thearyasamaj.org

ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' के सम्बन्ध में ज्ञातव्य प्राथमिक बातें

- भावेश मरेजा

1. ओम्' (OM/AUM) को ईश्वर (परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्म अथवा भगवान) का सर्वश्रेष्ठ-सर्वोत्तम नाम माना जाता है। 'ओम्' का ठीक से उच्चारण हो सके इसलिए उसे 'ओ३म्' लिखा जाता है। कई बार लोग 'ओम्' को 'ॐ' इस संकेत रूप में भी लिख देते हैं। 'ओ३म्' में जो तीन की संख्या '३' का समावेश है उसका तात्पर्य यह दर्शाने का है कि 'ओ' का उच्चारण प्लुत करना है। ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत-इन तीनों प्रकार से उच्चारण किया जाता है। ह्रस्व उच्चारण करने में जितना समय लगता है, इससे दुगना समय दीर्घ उच्चारण में और तीन गुना समय प्लुत उच्चारण में लगता है। इसलिए 'ओ३म्' में 'ओ' का प्लुत उच्चारण करना है-यही बताने के लिए 'ओ' के पश्वात् '3' संख्या लिखी जाती है। गुजरात में कई बार लोग भूल से 'ओ३म्' ('ओम्') का उच्चारण 'ओरूम्' करते हैं, क्योंकि गुजराती में 'रू' को '३' लिखा जाता है।

2. सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द जी का विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चौदह समुल्लास (अध्याय या प्रकरण) हैं, परन्तु इसके प्रथम ही समुल्लास का आरम्भ ओ३म्' की व्याख्या से किया गया है। 'ओ३म्' को 'ओंकार शब्द' भी कह सकते हैं। 'ओ३म्' परमेश्वर का सर्वोत्तम, प्रधान अथवा निज नाम है। 'ओ३म्' को छोड़कर परमेश्वर के जितने भी अन्य नाम हैं वे सब गौणिक या गौण नाम हैं। मुख्य नाम तो केवल 'ओ३म्' ही है 'ओ३म्' नाम केवल और केवल परमात्मा ही का नाम है। परमात्मा से भिन्न किसी अन्य पदार्थ का नाम 'ओ३म्' नहीं हो सकता है। यह भिन्न बात है कि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपना या अन्य किसी व्यक्ति या ईश्वरेतर पदार्थ का नाम 'ओ३म्' रख लेवें।

3. अ-उ-म्-येन तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। 'अ' और 'उ' मिलकर 'ओ' होता है। 'ओ' का प्लुत उच्चारण करना है इसलिए इसके आगे '३' लिखा जाता है। इस एक 'ओ३म्' नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं-अनेकानेक नामों का समावेश हो जाता है। अ-कार विराट्, अग्नि, वायु आदि नामों का, उ-कार हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि नामों का और म्-कार ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि नामों का वाचक और ग्राहक है। वेदादि सत्य शास्त्रों में 'ओ३म्' का स्पष्ट व्याख्यान किया गया है। इन शास्त्रों में प्रकरण अनुकूल विराट, अग्नि आदि सब नाम परमेश्वर ही के नाम बताए गए हैं।

4. यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 17 वें मन्त्र में 'ओ३म' को परमेश्वर का नाम बताते हुए कहा गया है-(**'ओं खम्ब्रह्म'**)। अर्थात् जिसका नाम 'ओ३म्' है वह आकाशवत् महान्-सर्वव्यापक है। 'ओ३म' का मुख्य अर्थ (**'अवतीत्योम'**) से यह लिया जाता है कि-ईश्वर रक्षा करनेवाला है। ईश्वर का रक्षा करने के गुण का प्रकाश 'ओम्' नाम से होता है। ईश्वर सर्वरक्षक है-इस सत्य को 'ओ३म' नाम प्रकट करता है। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है-(**'ओमित्येतदक्षरमुदगीथमुपासीत'**) अर्थात् जिसका नाम 'ओ३म्' है, वह कभी नष्ट नहीं होता है। उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं।

5. कठोपनिषद् (वल्ली 2, मन्त्र 15) का मन्त्र-**''सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥''** बड़ा प्रसिद्ध है। इस मन्त्र में उपनित्षकार ने इस बात की घोषणा की है कि सब वेद, सब ध र्मानुष्ठानरूप तपश्चरण, जिसका कथन और मान्य करते हैं और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य आश्रम करते हैं, उसका नाम 'ओ३म्' है।

6. **'सत्यार्थ प्रकाश'** के सप्तम समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने ईश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए यह बताते हुए योग के अंगों का वर्णन किया है। वहाँ उन्होंने लिखा है कि उपासक को नित्य प्रति परमात्मा के 'ओ३म्' नाम का अर्थ विचार और जप करना चाहिए।

7. **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** ग्रन्थ के उपासना विषयक प्रकरण में महर्षि दयानन्द जी ने योग दर्शन के **'तस्य वाचकः प्रणवः'** (1.27) सूत्र की व्याख्या

www.thearyasamaj.org

करते हुए लिखा है-''जो ईश्वर का 'ओंकार' नाम है सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ कर दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है।'' इसी प्रकरण में महर्षि ने योग दर्शन के अगले **'तज्जपस्तदर्थभावनम्'** (1.28) सूत्र को उद्धृत कर इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है-''इसलिए इसी ('ओ३म्') नाम का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थ-विचार सदा करना चाहिए कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो।'' महर्षि ने अष्टांग योग के दूसरे अंग नियम में जिसका निर्देश किया गया है उस 'स्वाध्याय' में 'ओंकार के विचार' का समावेश किया है।

8. 'ओ३म्' को **'प्रणव'** कहा जाता है। 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'णु-स्तुतौ' इस धातु से 'प्रणव' शब्द निष्पन्न होता है। इस 'ओ३म्' पद के द्वारा ईश्वर की प्रकृष्ट रूप से-उत्तम प्रकार से स्तुति की जाती है, करनी चाहिए-इसीलिए इसे 'प्रणव' कहते हैं। ईश्वर के केवल एक ही नाम 'ओ३म्' को 'प्रणव' कहा जाता है। उसके किसी भी अन्य नाम को 'प्रणव' नहीं कहा जाता है। 'ओ३म्' को 'उद्गीथ' भी कहा जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् आदि में 'उद्गीथ-उपासना' का वर्णन पाया जाता है।

9. यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 15वें मन्त्र में **'ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर। कृतं स्मर।'** आया है। इसका भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं-''हे (क्रतो) कर्म करने वाले जीव! तू शरीर छूटते समय (ओ३म्) इस नाम-वाच्य ईश्वर को (स्मर) स्मरण कर, (क्लिबे) अपने सामर्थ्य के लिए परमात्मा और स्वरूप का (स्मर) स्मरण कर, (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर।''

10. ईश्वर एक द्रव्य, पदार्थ, वस्तु, सत्ता, नामी या वाच्य है। 'ओ३म्' उस ईश्वर का वाचक है, द्योतक है, संज्ञा या नाम है। ईश्वर अभिधेय है, 'ओ३म्' अभिधान है। ईश्वर पदार्थ है, 'ओ३म्' पद है। नाम से नामी का ज्ञान होता है। 'ओ३म्' से ईश्वर के स्वरूप की अभिव्यक्ति-प्रकाश होता है। ईश्वर और 'ओ३म्' नाम नित्य सम्बन्ध है। जब हम कहते हैं कि 'ओ३म्' ईश्वर का नाम है, या वाचक है, तब हम ईश्वर और 'ओ३म्' नाम के बीच पहले से विद्यमान नित्य सम्बन्ध को प्रकट करते हैं, कोई नया सम्बन्ध स्थापित नहीं करते हैं।

'ओ३म्' की अनेकानेक विशेषताएँ है। अत: 'ओ३म्' पर प्रगाढ़ आस्तिक्य भाव से ईश्वर प्रणिधान पूर्वक चिन्तन, मनन अर्थ भावना करने की आवश्यकता है, क्योंकि 'ओ३म्' का विचार ही प्रकारान्तर से ईश्वर विचार है।

- 8-17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात-392015

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

www.thearyasamaj.org

अधर्म से अर्जित धन के भयंकर दुष्परिणाम

- राजवीर शास्त्री

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्त्तुर्भूलानि कृन्तति॥

(मनु. 4.172)

अर्थ-किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता, परन्तु जिस समय अधर्म करता है उसी समय फल भी नहीं होता। इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है। इसी क्रम से

अधर्मोणधते वाक्तत्तो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति॥

(मनु. 4.175)

अर्थ-जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बन्ध को तोड़ जल चारों ओर फैल जाता है, वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है। पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खानपान वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है, वैसे अधर्मी नष्ट हो जाता है। (सत्यार्थ चतुर्थ समु.)

आजकल अधर्मात्मा अधर्म से अर्जित धन से बढ़ते दिखाई दे रहे हैं और धर्मात्मा दु:खी हो रहे हैं। फिर क्या हमें धर्माचरण करना छोड़ देना चाहिये, ऐसी आशंका करने वालों को महर्षि मनु सावधान कर रहे हैं कि अधर्म से अर्जित धन की चार गति होती हैं-

(1) अधर्म से अर्जित धन प्रारम्भ में मनुष्य को बढ़ाता है।

(2) तत्पश्चात् खान-पान, वस्त्र, आभूषण तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर देता है।

(3) तत्पश्चात् कोठी, बंगले, कार, मोटर, गाड़ियाँ भी प्राप्त कर लेता है।

(4) तत्पश्चात् धन के बल से अपने शत्रु=विरोधयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

(5) तत्पश्चात् मूल कटे वृक्ष की भांति समूल नष्ट हो जाता है। इसलिए धर्मात्मा पुरुषों को अधर्म की उपर्युक्त दशाओं को देखते हुए भी समूल नाश से भयभीत रहकर धर्माचरण का त्याग कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए। महर्षि दयानन्द व वेदज्ञ महर्षि मनु की चेतावनी हमें सदा ध्यान रखनी चाहिए। क्योंकि महर्षि ने गीता का एक वाक्य देकर हम सब को उद्‌बोधन किया है-

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्॥ (गीता)

यह बड़ा दृढ़ निश्चय है कि जो-जो विद्या और धर्म-प्राप्ति के कर्म हैं, वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् परिणाम में अमृत के सदृश्य होते हैं।

अधर्म के दुष्परिणामों को समझाते हुए आर्यसमाज के धुरन्धर विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने एक कहानी देकर समझाने का प्रयास किया है। आशा है कि पाठक उससे लाभ उठाकर धन्यवाद करेंगे-पंजाब के लाहौर नगर में एक हलवाई रहता था, वह प्रतिदिन एक रूपये का दूध लाकर बेचा करता था और उससे अपने परिवार को पालता था। वह धार्मिक वृत्ति का होने से दूध में पानी न मिलाकर खालिस दूध बेचता था। उससे दो आने का लाभ मिलता था, उनसे ही अपना निर्वाह करता था। वह बहुत दिनों तक ऐसे ही गुजारा करता रहा। एक दिन उसके मन में विचार आया कि यदि दूध में एक लोटा पानी मिलाया जाये तो किसी को पता भी न लगेगा और मुझे अधिक लाभ होने से परिवार का जीवन सुखमय बन जायेगा।

हलवाई को पानी मिला दूध बेचने से अब दो आने की जगह साढ़े तीन आने प्राप्त होने लगे। धीरे-धीरे हलवाई का धन बढ़ने से धन-सम्पन्न हो गया। उस हलवाई के सामने एक-दूसरा हलवाई दूध का कार्य करता था और वह अत्यन्त धार्मिक वृत्ति का होने से सामने वाले हलवाई के कार्य से अत्यन्त दु:खी था। जब कोई साधु-महात्मा उसके यहां आये तो उनसे यही कहता रहता था-परमात्मा के न्यायालय में कुछ न्याय नहीं है। वे पूछते-यह क्या कह रहे हो, परमात्मा तो बहुत न्यायकारी है, वह सब मनुष्यों के पाप-पुण्यों

www.thearyasamaj.org

का फल देकर अपनी व्यवस्था में रखता है।

हलवाई बोला-महाराज! आपके कहने से मैं मान लेता हूँ, परन्तु संसार में हम देख रहे हैं कि जो मनुष्य पाप करते हैं, ईश्वर की आज्ञा को तोड़ रहे हैं वे उत्तरोत्तर फूलते-फलते हैं और धर्मात्मा कष्ट पाते हैं और लोग यही कहकर चल देते हैं कि हम क्या करें, यह सब उसकी ही माया है कि कोई मौज से रह रहे हैं और कोई दु:ख पा रहे हैं।

एक बार एक साधु घूमते-फिरते उस नगर से, बाहर एक बगीचे में ठहर गए। नगर से सब लोग उनके दर्शनों के लिए जाने लगे और उनसे आत्म कल्याण का उपदेश प्राप्त करने लगे। उस साधु की बात इस हलवाई ने भी सुनी और यह भी साधु के दर्शन करने के लिए बगीचे में पहुँचा और दूसरों की भांति इसने भी अपने मन की व्यथा साधु से बताई कि संसार में कोई न्याय व्यवस्थ नहीं दिखाई देती क्योंकि हम देखते हैं कि पापी मनुष्य मौज उड़ा रहे हैं और धर्मात्मा दु:खी हो रहे हैं।

साधु ने भक्त की बात ध्यान से सुनी और उसे समझाने का प्रयास भी किया। परन्तु साधु की बात से असहमति प्रकट करते हुए भक्त बोला-महाराज! मुझे कैसे विश्वास हो जब कि मैं अपने सामने पानी मिलाकर दूध बेचने वाले को लखपति तथा सुख सम्पन्न देख रहा हूँ और मैं दूध बेचता हुआ बूढ़ा हो गया हूँ। दूध में एक बूँद पानी नहीं मिलाता और मेरी और उसकी दशा में आकाश पाताल का अन्तर है। मुझे ईश्वर की व्यवस्था पर लेशमात्र भी विश्वास नहीं हो रहा है कि वह न्यायकारी है और सबको पाप-पुण्य का फल ठीक-ठीक दे रहा है।

साधु-बताओ क्या वह हलवाई सुखी है?

हलवाई-पहले वह भोजन बहुत कष्ट से पाता था, परन्तु आजकल वह धन की वृद्धि से मौज कर रहा है।

साधु-भाई परमात्मा तो उसे धन दे रहे हैं। थोड़े दिनों में देखना कि उसका स्वभाव पैसे के कारण बिगड़ जायेगा और इच्छायें बढ़ने से धन भी न रहेगा। वह रोगी हो जायेगा, दवा के बिना दु:खी रहेगा।

हलवाई-हमें कैसे विश्वास हो कि उसके पास धन न रहेगा और वह दु:खी हो जायेगा।

साधु-क्या तुम बता सकोगे कि वह कितना पानी प्रतिदिन दूध में मिलाता है ओर अब तक कुल कितना पानी मिलाया है?

हलवाई-हिसाब लगाकर वर्ष, मास व दिन गिनकर बोला अब तक उसने दूध में पांच हजार लोटे जल मिलाया है।

साधु-यहाँ सामने मनुष्य के बराबर एक गहरा गड्ढा खुदवाओ और उसमें पांच हजार लोटे पानी डालो।

हलवाई-महाराज! ठीक है मैं वैसा ही करता हूँ भूमि में एक गड्ढा खुदवाता है और साधु के कहने पर उसमें पांच हजार लोटे पानी डालता है।

साधु-अच्छा अब इसमें खड़े होकर दिखाओ। जब वह पानी में खड़ा हुआ तो देखा पानी छाती तक आ गया है। साधु बोला-अभी थोड़ी प्रतीक्षा करो, जब पानी शिर तक आ जायेगा तो पाप का घड़ा भर जायेगा। वह लोटे की गिनती करता रहा, जब उसके अनुसार पानी पूरा हो गया तब उसकी दुकान में सहसैव आग लग गई और उसकी सब पाप की कमाई नष्ट हो गई।

तब वह हलवाई सन्तुष्ट होकर बोला-महाराज! अब मुझे विश्वास हो गया है कि परमात्मा का न्याय शाश्वत व सत्य है वह सभी को पाप-पुण्य का ठीक-ठीक फल दे रहा है। ठीक कहा है-सत्य ही पराधर्म है।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

www.thearyasamaj.org

कथनी व करणी में अन्तर क्यों

- जसवन्त राम गुगलानी

महर्षि दयानन्द जी ने भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्वभर में व्याप्त अन्धकार को मिटाने का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने वेदों के विरूद्ध चल रही कुरीतियों को सामूलों छेदन करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की तथा हमारे मार्गदर्शन हेतु सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रंथ लिख डाले। अब यह कार्यभार आर्यसमाजों पर है कि वे महर्षि के सपनों को साकार करें। क्या यह सम्भव है? मेरी निजी राय में यह असम्भव प्रतीत होता है। हो सकता है कि पाठगण मेरी इस धारण से सहमत न हों। परन्तु मैं अपनी राय के समर्थन में निवेदन करना चाहूंगा कि खेतों की रक्षा बाढ़ किया करती है। यदि बाढ़ ही खेतों को नष्ट करने पर उतारू हो जाय तो खेत कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। स्वामी जी महाराज द्वारा दिखाये मार्ग व बताये मन्तव्यों का उल्लंघन आर्य समाज के कर्णाधार, आर्य समाज का भविष्य क्या होगा? इस लेख के माध्यम से मैंने आर्यसमाज के साधारण सदस्य ही नहीं अपितु पदाधिकारियों को अपने मन्तव्यों के विपरीत आचरण करने के कुछ उदाहरण दिये हैं।

स्वामी जी महाराज ने मूर्तिपूजा का घोर खण्डन किया है। मैं कुछ आर्यसमाज के अधिकारियों से परिचित हों जो मञ्चों पर तो मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं परन्तु स्वयं शिवलिंग पर जल चढ़ाने जाते हैं। यह कार्य प्रातः काल के अन्धकार में किया जाता है। एक आर्य समाज के अधिकारी ने घर में ही मूर्त्ति रखी हुई है तथा प्रतिदिन उसकी पूजा करते हैं। ईश्वर को निराकार मानने वाला व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमा क्योंकर सम्भव समझने लगा।

एक अन्य सज्जन ब्रह्म यज्ञ (संध्या) नित्यप्रति करते हैं। परन्तु संध्या उपरान्त हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। जब उनको इस पर चेताया गया तो उत्तर में उन्हों ने कहा अपने पूर्वजों के गुणगान में आर्यसमाज को क्या आपत्ति हो सकती है। जहां तक पूर्वजों के गुणगान की बात है, मुझे उस पर आपत्ति नहीं है। महावीर हनुमान अत्यन्त बलशाली थे, वे गुणों के सागर भी थे। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि आर्यसमाज के मन्तव्यों को मानने वाला भूत प्रेत से कब से डरने लगा तथा सहायतार्थ हनुमान जी को पुकारने लगा क्या ही अच्छा होता यदि ऐसे सज्जन हनुमान जी के स्वामी सेवा के गुणों को अपने जीवन में अपनाते हुए जहाँ कहीं पर भी सेवारत हैं, लगन से सेवाकार्य को निभाते। दुष्टों के दलन में अपने बल का प्रयोग करते है।

अब आइये एक और सज्जन से मिलायें। यह सज्जन किसी व्यक्ति के निधन पर श्रद्धांजलि देते हुए परमात्मा से उसको स्वर्गवासी करने की प्रार्थना करना नहीं भूलते।

आप लोगों को विवाहोत्सवों के निमन्त्रण पत्र प्राप्त होते होंगे। अधिकांश आर्यसमाजियों के निमन्त्रण पत्रों के आमुख पृष्ठ पर गणेश का चित्र होता है। एक आर्यसमाजी ने यह तर्क दिया कि बाजार में कार्ड ही ऐसे मिलते हैं। अव्वल तो मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ दूसरा यह कि कार्ड पर मुद्रित-

1. **'विघ्न हरण मंगल करण गणनायक गजराज।**
प्रथम निमन्त्रण आपको पूर्ण कीजै काज॥
2. **वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।**
निर्विघ्न कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

आदि तो छपे हुए नहीं होते। विडम्बना तो यह है कि प्रभु के निज नाम ओ३म् का प्रयोग न कर के गणेश जिसको हाथी की सूण्ड लगाकर प्रदर्शित किया जाता है हमारे कार्य सिद्ध करने में सक्षम है।

एक आर्य समाज के अधिकारी ने पुत्र का विवाह किया, बधाई देने हेतु उनके घर पर जाना हुआ, देखकर अचम्बा हुआ कि प्रवेश पर ही वक्रतुण्ड की मूर्ति लगायी हुई थी। मैं कुछ सज्जनों से परिचित हूँ जो प्रतिष्ठित आर्यसमाजी हैं, प्रतिदिन प्रातः काल घर पर यज्ञ करते हें उनके फैक्टरी के कार्यालय में वक्रतुण्ड महाकाय विराजमान हैं तथा उनके आगे धूप दीप जलाया जाता है। वही क्यों अधिकांश आर्यसमाजियों की फैक्टरी में गणेश जी की मूर्ति फैक्टरी के प्रवेश द्वार अथवा कार्यालय के अन्दर लगी मिलेगी।

मेरे एक आर्यसमाजी मित्र ने एक आर्य विद्यालय

www.thearyasamaj.org

में स्थापित गणेश की मूर्ति पर घोर आपत्ति की परन्तु उनकी अपनी बैठक में 8-10 फुट का गणेश जी का चित्र लगाया हुआ मिला।

आइये कुछ ऐसे व्यक्तियों के बारे लिखना चाहूंगा जो मात्र लोकेषण पूर्ति हेतु माता के जगरातों में न केवल सम्मिलित होते हैं अपितु मूर्ति के आगे आरती की थाली लेकर आरती करते भी नजर आते हैं। मुझे एक बहुत पुरानी घटना स्मरण है। मेरे साथ मेरी आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य भी थे, आर्यसमाज के एक शीर्ष नेता को अपने कार्यक्रम में व्याख्या के लिए आमन्त्रित करने गये थे। वह नेता उन दिनों सांसद थे, एक अन्य आर्यसमाजी सांसद की शिकायत करते हुए बोले कि हमारी मार्किट में जगराता है और उन्हों ने वहां यह कहकर कि मैं आर्य समाजी हूँ'' जगराते में सम्मिलित नहीं हो सकता जबकि मैं आमन्त्रित किये जाने वाले नेता जगराते में शामिल हुआ, कारण बताते हुए कि राजनीति में भाग लेने वालों को सब कुछ करना पड़ता है।

मेरे एक अन्य मित्र हैं। आर्य समाज के अधिकारी हैं तथा पैतृक आर्य हैं। उनकी गाड़ी में उनके संग यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मार्ग में एक कार दुर्घटना ग्रस्त हुई पड़ी थी। कहने लगे देखिये इस कार का नम्बर अन्त में 13 है। मैंने पूछा आप का यह कहने का अभिप्राय क्या है तो बोले 13, 113, 1013 या 13 के अंक से विभाजित होने वाली संख्या यानि 26, 36, 117 आदि अपशकुन होता है और इसलिए दुर्घटना होने की सम्भावना अधिक रहती है। मैं सोच रहा था कि इनके अनुसार गिनती में से 13 अथवा 13 से विभाजित होने वाले अंक निकाल देने चाहिए।

एक अन्य आर्य समाज के मन्त्री थे। उन्हों ने स्वयं अपनी आंखों से स्टोव महाशय को प्रश्नों के उत्तर देते देखा। स्टोव जी यदि हां कहना चाहते तो अपनी एक टांग उठाते थे। महाशय जी जड़ और चेतन का अन्तर ही नहीं समझ पाये। इतना ही नहीं उन्होंने श्री गणेश जी के फोटो को दूध पीते भी देखा। बन्धुओं प्रकृति का नियम है कि भोजन तो जो भी करेगा वह मल का त्याग भी करेगा। विडम्बना तो यह है कि उन महाशय तथा उन समेत अन्य अनेक लोगों ने जो बुद्धि का प्रयोग ही नहीं करते ने गणेश जी के चित्रों व मूर्तियों को दूध पीता तो देखा पर मल विसर्जन करते नहीं देखा।

मेरी पूज्या बहिन जी हैं जो दयानन्द की तो दीवानी हैं पर उनके कार्य सिद्ध करते हैं बाला जी महाराज! बात-बात पर कहती हैं मेरे पर बाबा की कृपा है।

आर्य समाज के केन्द्रीय स्तर के अधिकारी अपनी माता जी की अस्थियों का विसर्जन गंगा जी में करने में बड़ा पुण्य मानते हैं।

मेरे एक अन्य मित्र जो आर्य समाज के अधिकारी हैं तथा अपने वृद्धजनों के देहान्त पर उनको चरण वन्दना करके उनके चरणों में नारियल तथा राशि चढ़ाते देखा गया।

एक अन्य महाशय जो प्रतिदिन यज्ञ करते थे। अन्य लोगों के घरों पर तो कुरीतियों तथा गलत परम्पराओं का जोर शोर से विरोध करते थे परन्तु उनके अपने भ्राता की मृत्यु पर जब दिवंगत के चित्र पर पुष्प माला पहनाये जाने पर किसी ने आपत्ति की तो उसके उत्तर में उन्होंने तथा उनके अन्य भाई जो एक आर्य समाज के प्रधान थे आपत्ति कर्ता पर रोष प्रकट किया तथा कहा कि यह तो दिवंगत के लिए सम्मान सूचक है। तो क्या पौराणिक भाई राम व कृष्ण के चित्र पर पुष्पमाला सम्मान हेतु नहीं डालते?

मेरे एक अन्य प्रिय मित्र जो आर्यसमाज के विभिन्न पदों को सुशोभित कर चुके हैं अपने भजन के माध्यम से उस प्रभु को पुकार कर राम की भांति भीलनी के बेर खाने का निमन्त्रण देते हैं। कृष्ण के रूप में विदुर के साग खाने का निमन्त्रण देते हैं और धनंजय को जैसे दर्शन दिये, मीरा के कृष्ण आदि के प्रति प्रेम के आधार पर पुकारते हैं तो क्या अब यह समझा जाय कि आर्यसमाजी भी उस निराकार ईश्वर को साकार रूप में मानने लगे हैं जो वेर व साग खाएंगे।

मुझे सबसे बड़ा अचम्भा तो तब हुआ जब आर्यसमाज एक महान संन्यासी ने एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए उपदेश दिया कि प्रतिदिन प्रातः धरती मां को व सूर्य भगवान को प्रणाम किया करें। मुझे यह बात समझ नहीं आई कि क्या धरती व सूर्य जड़ नहीं है। उनके उपदेश का प्रभाव देखने को भी मिला जब मैं आर्य परिवार की एक देवी को सूर्य को नमस्कार करते तथा तुलसी का जल चढ़ाते

www.thearyasamaj.org

देखता हूँ। बहुधा आर्य समाज के अधिकारीगण पुत्र पुत्री का विवाह करने के समय महर्षि के द्वारा बताये गये मार्ग को न अपना कर लड़के व लड़की के गुण व स्वभाव का मिलान करने की बजाय उनकी जन्मपत्री का मिलान करते हैं। आज भी ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ते देखे गये।

एक सज्जन आर्यसमाज के प्रधान पद के चुनाव के समय हुए निर्णय कि कोई ऐसा व्यक्ति जो मांसाहार करता हो, धूम्रपान करता हो, मद्यपान करता हो, आर्य समाज के किसी पद को ग्रहण न करके विपरीत घर में हुक्का पीते पाये गये। इतना ही नहीं बलिक अपनी पुत्री के विवाह पर मद्यपान किये हुए मिले।

कुछ अधिकारीगण मांस व अण्डे खाने का विरोध तो करते हैं परन्तु पेस्ट्री खाने में कोई आपत्ति उन्हें नहीं होती।

अब आर्य समाज के पुरोहितों के बारे निवेदन करना चाहूंगा। कुछ पुरोहित पौराणिक रीति रिवाज (विवाह आदि संस्कारों में) अपनाने में नहीं झिझकते। पूजा की थाली तैयार की जाती है। जिसमें स्वास्तिक का चिह्न अंकित किया जाता है, आशीर्वाद हेतु अक्षत थाली में डलवाए जाते हैं। इतना ही नहीं कुछ पुरोहितगण पौराणिक विधि से सत्यनारायण की कथा आदि भी कराते हैं। कुछ पुरोहित पौराणिक रीति रिवाज (विवाह आदि संस्कारों में) अपनाने में नहीं झिझकते। पूजा की थाली तैयारी की जाती है जिस में, स्वास्तिक का चिह्न अंकित किया जाता है, आशीर्वाद हेतु अक्षत थाली में डलवाए जाते हैं। इतना ही नहीं कुछ पुरोहित पौराणिक विधि से सत्यनारायण की कक्षा आदि भी कराते हैं।

अन्त में बड़े विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा कि आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य कार्यकर्त्ता, अधिकारीण, पुरोहित आर्यसमाज के मन्तव्यों व मान्यताओं व मर्यादाओं का पालन करें अन्यथा महर्षि के सपने संस्कार न हो पायेंगे ऐसा मेरा मानना है। पाठकगण इसको कैसा समझते हैं मैं नहीं जानता।

- म.न. 91/4, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव (हरियाणा)
दूरभाष-0124-2254316, मो. 9999667647

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता के महान योद्धा नेता जी श्री सुभाष चन्द्र बोस

- कन्हैया लाल आर्य

कन्हैयालाल आर्य

संसार में कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो साधना के पथ पर चल कर अपने जीवन को सार्थक करते हैं, कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो पीड़ितों की सेवा करने में अपने जीवन को धन्य मानते हैं, कुछ महापुरुषों में नेतृत्व के गुण बचपन से होते हैं, कुछ महापुरुष राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आप को आहुत कर जाते हैं परन्तु कुछ ही महापुरुष ऐसे होते हैं जो प्रारम्भ से ही नेतृत्व के गुणों से ओतप्रोत होते हुए, राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आप को आहुत करने में गौरवान्वित अनुभव करते हैं उनमें से एक महापुरुष का नाम था श्री सुभाष चन्द्र बोस। सम्भवत: 'नेता जी' केवल और केवल इस महापुरुष के नाम के साथ ही जुड़ा है, अन्य किसी के साथ नहीं।

जन्म स्थान एवम् माता-पिता-उड़ीसा का कटक शहर और उसका ग्राम कोडेलिया वह सौभाग्यशाली ग्राम हैं जिस ग्राम में एक ऐसे रत्न का जन्म हुआ जिसे लोग प्यार से सुभाष दा कहते हैं वह माँ श्रीमती प्रभावती एवं वह पिता श्री जानकी नाथ बोस सौभाग्यशाली है जिनके घर में 23 जनवरी 1897 को इस महामानव सुभाष जी ने जन्म लिया।

अंग्रेज स्वार्थी एवं विश्वासघाती हैं-एक सात-आठ वर्ष का बच्चा गंभीर मुख की आकृति बना कर बैठा है। बच्चे इस आयु में चंचल होते हैं, परन्तु यह बच्चा अपने मुख की गम्भीर आकृति बना कर बैठा है। उसकी बाल सखी कमला उस बच्चे को दूसरे खेलने वाले बच्चों के साथ खेलने के लिए कहती है परन्तु यह बच्चा उन बच्चों के साथ खेलने से मना करता है। परन्तु बाल सखी के बार-बार आग्रह करने पर वह बच्चा कहता है-''मुझे इन अहंकारी बच्चों के साथ खेलना अच्छा नहीं लगता। यह अंग्रेजों के बच्चे आततायिों की संताने हैं।'' वह अंग्रेज बच्चे इस बच्चे से उनके साथ न खेलने का कारण पूछते हैं तो वह उत्तर देता है-अंग्रेज स्वार्थी और विश्वास घाती हैं। मैं तुम जैसे स्वार्थी और विश्वासघाती पिताओं के पुत्रों के साथ खेलना अच्छा नहीं समझता। वह बच्चा कहता है कि इन अंग्रेजों के साथ खेलने की बात तो छोड़ों, मैं इनके साथ बात करना भी पसन्द नहीं करता। तब बाल सखी कहती है कि मैं भी अंग्रेजों के साथ खेलना पसन्द नहीं करती क्योंकि यह हम भारतीय को दीन दृष्टि से देखते हैं। तब वह बच्चा उस बाल सखी कमला से कहता है-मैं तुम्हें अपनी फौज में भर्ती करूंगा। बाल सखी ने पूछा-तुम फौज किस लिए बनाओगे? उस बच्चे ने उत्तर दिया-अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ने के लिए फौज आवश्यक है, मैं इसलिए अपनी एक फौज बनाऊँगा। इतने देर में उस बच्चे की माँ वहाँ आ गई। वह बाल सखी कमला उस बच्चे की माँ से बोली-मौसी जी। देखो यह आप का पुत्र फौज बनाने की बात कर रहा है। बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है। माता श्रीमती प्रभावती ने पूछा-सुभाष। यह बड़ी-बड़ी बातें तुम्हें कौन सिखा रहा है? उस बच्चे ने कहा-माँ, यह सब आप का आशीर्वाद है। माँ उसकी बात सुनकर मुस्करा देती है। यह बच्चा और कोई नहीं, स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस ही था जिसने बचपन से ही अन्यायी, अंग्रेजों को भारत की धरती से खदेड़ने के लिए फौज बनाने की तैयारी कर रहा है। तभी तो कहा है होनहार विरवान के होत चीकने पात। महापुरुषों के गुण पालने में ही दीखने लगते हैं। इन दोनों वाक्यों को इस राष्ट्र के महान सपूत सुभाष जी ने सिद्ध कर दिखाया।

अंग्रेज चाहे शिक्षक ही क्यों न हो, थप्पड़ मार दिया-अंग्रेज प्रोफैसर ओटंग कक्षा में पढ़ा रहे थे। उन्होंने किसी भारतीय छात्र से एक प्रश्न का उत्तर पूछा। छात्र तुरन्त उत्तर न दे सका। तब अंग्रेज प्रोफैसर ने उस भारतीय छात्र से कहा-''यू ब्लैक डाग, क्या खाक पढ़ता है? (तुम काले कुत्ते, क्या खाक पढ़ते हो?) वह भारतीय विद्यार्थी सहम गया। सुभाष विद्युतगति से एक दम बोला-कन्ट्रोल यूअर टंग, सर। (श्रीमान जी ,कृपया अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखिये। प्रोफैसर चीखा-यू सिट डाऊन (तुम बैठ जाओ) सुभाष ने तेज स्वर से कहा-आपने इस भारतीय छात्र को ब्लैक डाग (काला कुत्ता) क्यों कहा? प्रोफैसर आग बबूला हो उठा और बोला-'तुम बीच में क्यों बोला? डैम ब्लाडी...? बस अंग्रेज प्रोफेसर ओटंग का इतना ही कहना था कि सुभाष ने आव देखा न ताव (सुभाष तड़प उठा और भारतीयों का इतना अपमान उसे सहन नहीं हुआ और झपट कर प्रोफैसर के गले पर एक भरपूर थप्पड़ जड़ दिया। कक्षा में गहरा सन्नाटा छा गया। वह प्रोफैसर तो गाल सहलाता रहा। सुभाष ने न केवल

www.thearyasamaj.org

उस अंग्रेज को पीटा भी, तथा विद्यालय में हड़ताल भी करा दी। इस प्रसिद्ध यूरोपियन स्कूल में घटित होने वाली यह प्रथम दुस्साहसिक घटना थी जिसने समस्त गोरी चमड़ी वालों में भय का वातावरण बना दिया।

विद्यालय के अधिकारियों ने सुभाष को विद्यालय से निकाल दिया। पिता श्री जानकी नाथ बोस को जब घटना क्रम का पता चला तब उन्होंने सुभाष से कहा-यह तुमने क्या किया है? तुमने अपने भविष्य का नाश कर दिया है। सुभाष ने उत्तर दिया-पिता जी, प्रोफैसर ओटंग ने सभी भारतीयों का अपमान किया है। हम भारतीयों को मूर्ख, नालायक, काला कुत्ता और बदमाश कहा है। मैं भारतीयों का अपमान सहन नहीं कर सकता। जहां तक मेरे भविष्य की बात है मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आप के नाम को उज्जवल करूंगा। पिता की इच्छानुसार आई.सी.एस. की परीक्षा की परन्तु अपनी राष्ट्री भावना के अनुकूल आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीण करके भी सरकारी नौकरी स्वीकार न करके देश के लिए अपने जीवन को आहुत कर दिया।

भिखारिन की सहायता करना: एक दिन सुभाष की माता प्रभावती ने सुभाष के कमरे में प्रवेश किया। क्या देखती है कि कुछ चीटियां सुभाष की पुस्तकों की अलमारी में प्रवेश कर रही है। माता जी ने अलमारी खोली, दो रोटियां एक कागज में लिपटी है, उन रोटियों को खाने के लिए चीटिया आ रही है। इतनी देर में सुभाष ने अपने कमरे में प्रवेश किया। माँ ने पूछा यह रोटिया किस लिए रख रखी है? सुभाष ने पूछा-माँ, इन रोटियों को अब बाहर फेक दो। माँ ने पूछा-सुभाष क्या बात है? इन रोटियों को देखकर दु:खी क्यों हो रहा है? सुभाष ने उत्तर दिया-माँ, अपने खाने से बचाकर दो रोटिया मैं प्रतिदिन एक भिखारिन को देता था। आज वह मिली नहीं थी, इसलिए मैंने यह रोटियां इसी आशा में अलमारी में रख दी कि थोड़ी देर के पश्चात् यह रोटियां दे आऊँगा। परन्तु अभी-अभी मैं इस भिखारिन को देखने गया था तो पता चला कि बेचारी का स्वर्गवास हो गया है।'' अपनी बात समाप्त कर सुभाष इस प्रकार दु:खी हो गये मानो भिखारिन न होकर कोई आत्मीय की मृत्यु हो गई हो। सुभाष ने सहज भाव से कहा-माँ, हमें निर्धनों की सहायता करनी चाहिए। यह उन पर कोई एहसान नहीं है, हमारा कर्त्तव्य है। माँ ने सुभाष को गले से लगाते हुए कहा-सुभाष। इतनी संवेदनायें कहाँ से लाते हो? यह पूरे संसार का दु:ख तुम कहाँ समेटे रहते हो? यह कह कर माँ पुत्र दोनों गले लग गये और रोने लगे। माँ इसलिए हैरान थी कि इतना छोटा सा बच्चा और इतनी बड़ी-बड़ी बातें और सुभाष इसलिए रो रहा था कि मेरे भारत में कितनी निर्धनता है, मैं इसे कब समाप्त करूंगा? ऐसी ही घटना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन में भी आती है। एक दिन ऋषि दयानन्द सायंकाल के समय ध्यान में बैठे थे। बाहर जल में बहाने के लिए एक माँ अपने पुत्र के शव को लिए तैयार खड़ी थी। ऋषि दयानन्द जी ने देखा कि उस बच्चे के शव से कफन को इसलिए अलग कर रही थी कि वह अपने तन को ढक सके। ऐसी निर्धनता देखकर ऋषि दयानन्द का हृदय तड़प उठा और कहा हे प्रभु। इस देश की एक माँ अपने पुत्र के शव को कफन तक भी उपलब्ध नहीं करा सकती। इस देश की निर्धनता का मूल कारण यह आततायी अंग्रेज ही हैं। यही बात सुभाष के मन मस्तिष्क पर भी छा गई और सुभाष ने इन अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ने के लिए संकल्प कर लिया।

जाजपुर में हैजे का प्रकोप-समाचार पत्र में एक समाचार छपा-जाजपुर में हैजे का भीषण प्रकोप। नीचे हैजे से होने वाली क्षति का वर्णन पढ़कर सुभाष की आंखे फटी की फटी सी रह गई। सुभाष पर इस दु:खद समाचार की गहरी प्रतिक्रिया हुई। बस इन पीड़ित रोगियों की सेवा करने का संकल्प कर लिया। वह यह भी जानते थे कि उसके पिता हृदय तथा विचारों से महान होते हुए भी अपने जीवन स्तर के सम्बन्ध में अत्यन्त सजग हैं। वे कभी नहीं चाहेंगे कि उनका बेटा इन रोगियों के बीच जाकर उनकी सहायता करें। प्रत्येक व्यक्ति के अपने अपने कर्म होता हैं, भावनाएं और संवेदनाएं भी अलग-अलग होती हैं। अपनी भावनाओं, संवेदनाओं, स्वभाव को प्रमुखता देते हुए, भूख प्यास की चिन्ता किये बिना जाजपुर के हैजा पीड़ितों की सेवा में जुट गया। उसकी सादगी, विनम्रता, निष्ठा, लगन और सेवा तत्परता को देख कर किसी को अनुमान भी न हो सका कि वह कटक के सम्मानित सरकारी वकील राय बहादुर श्री जानकी नाथ का पुत्र होगा। जब लोगों को ज्ञात हुआ तो वे बिस्मिल रह गये। सुभाष लौटा, पिता को प्रणाम किया। पिता से अत्यन्त विनम्र भाव से कहा-पिता जी, क्षमा कीजियेगा। मैं आपका आदेश लिए बिना जाजपुर अपनी भावनाओं के वशीभूत होकर सेवाकार्य के लिए चला गया। पिता ने कहा-क्षमा का तो प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु जो तुमने किया है वह सर्वथा मेरी

www.thearyasamaj.org

प्रतिष्ठा के विरूद्ध है। क्या एक तुम्हारी ही सेवा की आवश्कता थी। यदि तुम्हारा यही रंग ढंग रहा तो तुम अपना भविष्य अन्धकारमय बना लोगे। इतनी देर में समाचार मिला कि सुभाष ने मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की है। सुभाष ने हंसते हुए कहा-अच्छा हुआ कि किसी अंग्रेजी कॉलेज में पढ़ने के स्थान पर किसी भारतीय कॉलेज में पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा।

कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम बदलकर भारतीय नाम रखे-20 जुलाई 1921 को सुभाष बाबू की मुलाकात महात्मा गांधी से हुई। उन्होंने उनकी मुलाकात कलकत्ता मेयर दास बाबू से कराई। दास बाबू सुभाष के विचारों से इतने प्रभावित हो गये कि उन्होंने सुभाष को कार्यकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त कर लिया। सुभाष बाबू तो अंग्रेजों से चिढ़े हुए थे उन्होंने जितने भी कलकता में अंग्रेजों के नाम से रास्ते थे, लगभग उन सबके भारतीय नाम रख दिये और अंग्रेजी नाम हटा दिये। चितरंजन दास जी को अपना राजनैतिक गुरु बनाया- बंगाल के वरिष्ठ नेता देशबन्धु श्री चितरंजन दास जी ने अपनी लाखों रूपयों की वकालत को ठोकर मार दी। उनके इस त्याग से प्रभावित होकर, उनमें श्रद्धाभाव रखते हुए उन्हें अपना राजनैतिक गुरु मानना स्वीकार कर लिया। त्यागी गुरु का शिष्य भी त्यागी होना चाहिए, यह बात सुभाष ने सिद्ध कर दी।

आई.सी.एस. की नौकरी छोड़ दी- एक धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद सुभाष का सांसारिक धन, वैभव, पदवी की ओर झुकाव नहीं था। मित्रगण उसे संन्यासी कहते थे। अंग्रेज सरकार की दमनकारी एवं अन्याय पूर्ण नीति के विरोध में आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करके भी सरकारी नौकरी छोड़ दी। स्वयं ब्रिटिश सरकार के भारत मन्त्री के समझाने के बावजूद भी क्लेक्टर और कमीशनर बनने की बजाय मातृभूमि का सेवक बनना स्वीकार किया।

बंगाल की भयंकर बाढ़- बंगाल की भयंकर बाढ़ में फंसे लोगों की भरपूर सहायता की। सामाजिक कार्य निरन्तर चलते रहे इसके लिए युवक दल की स्थापना की ताकि कृषक समाज की सहायता की जा सकें।

यतीन्द्र नाथ की शवयात्रा में भारतीयों में जोश भरा- क्रांतिकारी यतीन्द्र नाथ ने जेल में 63 दिनों की भूखहड़ताल इसलिए की कि वहां क्रान्तिकारियों के साथ बहुत ही दुर्व्यवहार किया जाता था। वहीं उनका निधन हो गया। उनकी शवयात्रा सरकार के विरोध के बावजूद निकाली। अंग्रेजो के विरूद्ध जीतना जोशीला भाषण दे सकते थे, दिया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें पुन: गिरफ्तार कर लिया।

ब्लैक हाल स्मारक को हटाना- अंग्रेजों ने भारतीयों को अपमानित करने के लिए एक ब्लैक हाल स्मारक बनवाया। सुभाष इस देश व भारतीयों का अपमान समझते थे। उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध समझौता विरोधी कॉन्फ्रैंस का आयोजन किया। चाहे अंग्रेज सरकार ने इन्हें पुन: गिरफ्तार कर लिया परन्तु सुभाष के प्रभाव से भयभीत होकर ब्लैक हॉल स्मारक को हटा दिया।

गांधी जी से मतभेद- रवीन्द्र नाथ टैगौर, प्रफुल्लचन्द्र राय, मेद्यनाथ साहा जैसे वैज्ञानिक भी सुभाष की कार्यशैली से सहमत थे परन्तु गांधी जी उनकी कार्यशैली को पसन्द नहीं करते थे। चाहे गांधी जी के सहयोग से 1931 में वे कांग्रेस के अध्यक्ष बने। गांधी जी उन्हें अपनी शैली के अनुसार चलाना चाहते थे परन्तु बन का यह सिंह पिंजरे में कैसे बन्द रह सकता था? उन्होंने कांग्रेस पार्टी ही छोड़ दी क्यों कि गांधी जी को नीति अंग्रेजों को सहयोग करके स्वराज्य पाने की थी जब कि सुभाष यह जानते थे कि ये अंग्रेज स्वार्थी विश्वासघाती एवं अन्यायी लोग है यह शान्ति से हमें आजादी नहीं देंगे। इसके सशस्त्र क्रान्ति करनी होगी। गांधी जी से मतभेद हो गये और उनसे अलग हो गये।

पं. मोती लाल नेहरू एवं जवाहर लाल नेहरू से सम्बन्ध- सुभाष जी की कार्यनिष्ठा, नायकत्व, देश प्रेम, लगन व उच्च चरित्र की प्रशंसा करते हुए पं. मोती लाल नेहरू ने गद्‌गद् कण्ठ से कहा था-सुभाष चन्द्र बोस मुझे अपने लड़के की तरह प्यारे है। परन्तु इस देश का दुर्भाग्य कि जिस सुभाष को जवाहर लाल नेहरू का पिता अपने लड़के के समान मानता है वहां पं. मोती लाल नेहरू का पुत्र जवाहर लाल नेहरू सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से सम्बन्धित फाईलों को गुम करा देता है।

सफलता के लिए ईश्वर का सहारा-दक्षिण पूर्व एशिया के भारतीयों ने सिंगापुर में एक ऐतिहासिक सम्मेलन किया। उस सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सुभाष ने कहा था-भारत की स्वाधीनता आन्दोलन का नेता चुनकर आपने मुझे जो सम्मान प्रदान किया है। उसके लिए मैं आपका अपनी अन्तरात्मा से धन्यवाद करता हूँ। मैं यह उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा मुझे अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करे, जिससे मैं अपने देशवासियों और प्रवासी भारतीयों को

www.thearyasamaj.org

पूर्ण सन्तुष्ट कर सकूँ।

सैनिकों के लिए तीन आदर्श- सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा-भारत की स्वाधीन सेना के सिपाहियों। आज मैं अपार गौरव तथा अद्भुत आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ कि भारत की स्वाधीन सेना का निर्माण हो गया है। यह फौज भारत को ही स्वतन्त्र नहीं करेगी वरन स्वाधीन भारत की भावी सेना का निर्माण भी करेगी। सैनिक होने के नाते आपको सदा तीन आदर्श अपने सामने रखने चाहिए। 1. विश्वास पात्रता, 2. कर्त्तव्य, 3. बालिदान। मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं सदैव आपके साथ रहूंगा। इस समय मैं आपको भूख, प्यास और संघर्ष के सिवाय कुछ नहीं दे सकता। यह कोई नहीं जानता कि देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हममें से कौन जीवित बचेगा? परन्तु इतना निश्चित है कि हमारा संघर्ष रंग लायेगा। हमारा देश स्वतन्त्र होगा परन्तु इसके लिए हमें सर्वात्मना समर्पित होना होगा।''

स्वतन्त्रता का सेवक- सिंगापुर में जापान के जनरल तोजो उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा-मुझे विश्वास है कि सुभाष बोस स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति होंगे। जापान को भारत पर किसी राष्ट्रपति को लादने का अधिकार तो नहीं है परन्तु हम इस महामानव को इस योग्य समझते हैं। सुभाष बोस ने जनरल तोजो की इस बात का खण्डन करते हुए कहा था-स्वतन्त्र भारत की जनता जिसे चाहेगी उसे अपना प्रथम राष्ट्रपति चुन लेगी। मैं तो स्वतन्त्रता का सेवक मात्र हूँ।

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा- जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। हिटलर से मिले। जर्मनी में भारतीय स्वतन्त्रता संगठन तथा आजाद हिन्द रेडियों की स्थापना की। जर्मनी से, जापान पहुंचकर युवाओं का आह्वान करते हुए यह नारा दिया। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। 'जय हिन्द' का नारा भी सुभाष की देन थी।

सब को आकर्षित करने की कला- सुभाष जी केवल मेधावी छात्र रहे हों। अथवा उसमें केवल देशभक्ति ही रही हो, ऐसी बात नहीं थी वरन् वह अनेक गुणों का साकार प्रतीक था। उसका चरित्र उस हीरे की भांति था जो किसी भी अग्नि परीक्षा में धूमिल नहीं पड़ता था। उसके आचरण में ऐसी गम्भीरता और सन्तुलन था जिससे कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उसकी आकृति में ऐसा ओज तथा दृढ़ता थी कि लोगों को पलभर में आकर्षित कर लेती थी। आजाद हिन्द फौज का गीत-

कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा।
ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पर लुटाये जा।
चलों दिल्ली पुकार के, कौमी निशा सम्भाल के।
लाल किले पै गाड़ के, फहराये जा फहराये जा।

वह गीत था जिसे सैनिक झूमते झूमते गाते हुए राष्ट्र की वेदी पर बलिदान हो जाते थे। किन्तु आह! भारतीयों का दुर्भाग्य! देश का दुर्भाग्य! 23 अगस्त 1945 को टोकियो रेडियो के निम्न समाचार ने भारतीयों पर वज्रपात कर दिया और पूरा विश्व स्तब्ध रहा गया।

आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार के सर्वोच्च अधिकारी श्री सुभाष चन्द्र बोस कर्नल हबीर्बुरहमान के साथ बैंकॉक से टोकिया आ रहे थे.... फारमोसा के निकट ताइहोक नामक स्थान पर उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसमें आग लग जाने के कारण नेता जी मृत्यु को प्राप्त हुए। इस समाचार को सुनकर सम्पूर्ण भारतीय एवम् प्रवासी भारतीय शोकमग्न हो गये। अंग्रेज भी चकित रह गये। उनको भी इस समाचार पर पूर्ण विश्वास नहीं हो रहा था। वे यह समझ रहे थे कि यह समाचार केवल हम अंग्रेजों को भ्रमित करने के लिए दिया गया है। उनकी मृत्यु एक रहस्य बनकर रह गई। यदि वह सचमुच भारत की आजादी के बाद आ गये होते तो इस देश का इतिहास कुछ और ही होता। यदि वे देश के राष्ट्रपति और सरदार पटेल देश के प्रधानमन्त्री बनते तो आज भारत विश्व का सिरमौर राष्ट्र होता परन्तु सभी आशा में ध ूमिल हो गई। सुभाष जी का कुछ पता न चला। उनकी मृत्यु पर पर्दा ही पड़ा रह गया। आजादी के महान योद्धा के जीवन का अन्तिम भाग रहस्यमय ही बन गया।

अब इतना समय बीत गया है कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का कही जीवित रहना असम्भव है परन्तु फिर भी कभी भारत का इतिहास निष्पक्ष ढंग से लिखा गया तो भी सुभाष चन्द्रबोस जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। उनका अन्तिम समय कैसा भी क्यों न रहा हो वह भारत के महान सपूत थे और यह देश युगों-युगों तक उनको नमन करता रहेगा। स्वाधीनता के पुजारी, भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले त्याग और बलिदान की इस मूर्ति को शत-शत नमन।

- 4/44 शिवाजी नगर, गुरुग्राम चलभाष-09911197073

www.thearyasamaj.org

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

- सूर्य देव चौधरी

भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सभी सम्प्रदायों में स्वर्ग का वर्णन आता है। उनका स्वर्ग नाना प्रकार के सुखोपभोग के साधनों से पूरित पृथिवी से दूर एक लोक विशेष है, जो मरने के बाद किसी को उसके पुण्य कर्म के फलस्वरूप प्राप्त होता है। लेकिन वैदिक स्वर्ग की अवधारणा इससे भिन्न है। वैदिक स्वर्ग किसी दूसरे लोक में अवस्थित नहीं है, बल्कि इसी धरती पर है, वेदों के अनुसार सुख विशेष की प्राप्ति का नाम ही स्वर्ग है और यह मरने के बाद नहीं बल्कि इसी जीवन में प्राप्त होता है। वैदिक स्वर्ग का एक चित्र अथर्ववेद में इस प्रकार खींचा गया है:-

घृतहृदा मधुकूला सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना। एतास्त्वा धारा उपयन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमानाः॥ -अथर्व 4.34.6

जहां घी एवं मधु से पूर्ण सरोवर हों, दूध-दही एवं शुद्ध जल की नदियाँ प्रवाहित हो रही हों तथा आनन्द को उत्पन्न करने वाली धाराएं सदा वर्तमान हों, वही स्वर्ग लोक है।

इसी स्वर्ग का वर्णन चाणक्य ने इस प्रकार किया है-**यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी।**
विभवेयश्व संतुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि॥

चाणक्य नीति (2/3)

जिसका पुत्र वश में है, स्त्री आज्ञाकारिणी हो और विपुल ऐवश्वर्य है, उसको निश्चित रूप से इस संसार में ही स्वर्गलोक की प्राप्ति हो जाती है।

पाश्चात्य विद्वान Hare ने मानो इसी स्वर्ग का वर्णन करते हुए लिखा है- To Adam Paradise was home and to the good among his descendants home is paradise. अर्थात् आदम का घर स्वर्ग में था, लेकिन उसकी उत्तम संतान अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों का घर ही स्वर्ग है।

स्वर्ग के इसी अवधारणा को मूर्त्त रूप देने के लिए वैदिक व्यवस्था में मनुष्य जीवन के सम्पूर्ण आयु को चार आश्रमों में विभाजित किया गया है। वे आश्रम क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास हैं। इन आश्रमों का विभाजन बड़ा ही वैज्ञानिक है। जीवन के सभी तरह के सुखों का इसमें सम्यक् संतुलन है, क्योंकि यह विभाजन मनुष्य की अवस्थाओं और तद्नुरूप कार्य की योग्यताओं पर आधारित है। ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचर्य धारण करते हुए विद्या अध्ययन करने का विधान है जिससे मनुष्य में शारीरिक एवं आत्मिक बल का विकास होता है। शारीरिक एवं आत्मिक बल के बिना जीवन में कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। इसलिए कहा गया है-**'शरीरोऽयं खलु धर्मस्य साधन' नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः'** अर्थात् स्वस्थ शरीर ही धर्म का साधन है और यह आत्मा बलहीन को प्राप्त नहीं होती है। इससे ब्रह्मचर्य आश्रम का महत्व स्पष्ट हो जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति तक मनुष्य युवावस्था को प्राप्त कर लेता है। तब परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार धर्मपूर्वक सृष्टिक्रम को आगे बढ़ाने के लिए और साथ ही सांसारिक सुख भोगने के लिए विवाह करके मनुष्य दूसरे आश्रम यानी गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थ जीवन के सम्पूर्ण कर्त्तव्यों का सम्यक् निर्वहन करने के बाद घर की सम्पत्ति एवं उत्तरदायित्व को अपने ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर मनुष्य को 51वें वर्ष में तीसरे वानप्रस्थ आश्रम में चले जाने का वैदिक विधान है। वहां पर पारिवारिक मोहमाया से परे तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए यथाशक्ति समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में वह अपना योगदान करता है। इस तीसरे आश्रम में वैराग्य का पूर्ण अभ्यास हो जाने पर मनुष्य को जीवन के अन्तिम भाग में संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होकर अभ्यास, स्वाध्याय और प्रवचन से संसार का कल्याण करना चाहिए। पहले जब इस आश्रम व्यवस्था का पूर्ण पालन होता था तो यह आर्यावर्त्त देश स्वर्गिक सुख से पूरित था और यहाँ के लोग देव कहलाते थे। आज भी यदि इस आश्रम व्यवस्था का सम्यक् पालन हो, तो यह धरती अवश्य ही स्वर्ग में परिणत हो जाएगी। हालांकि सभी आश्रमों का अपना-अपना महत्व है, लेकिन इन सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम की महिमा अधिक है। इसलिए गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ कहा गया है। मनुजी ने कहा है-

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितम्।
तथैवाश्रमिणेः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितम॥

मनु. 6.60

www.thearyasamaj.org

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते जन्तवः॥
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः॥
यस्मात्त्र्योप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही॥
स संधार्य प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधाया दुर्बलेन्द्रियैः॥

मनु 3/77-79

जैसे नदियाँ एवं बड़े-बड़े नद समुद्र में जाकर स्थित होते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थाश्रम से आश्रम पाकर स्थिर होते हैं जैसे सभी जीवधारी वायु पर अश्रित रहते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थश्रम पर आश्रित हैं। चूँकि दान एवं अन्नादि के द्वारा गृहस्थ ही ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास तीनों आश्रमों का पालन करता है, इसलिए गृहस्थाश्रम ज्येष्ठ अर्थात् बड़ा है।

अतः मोक्ष एवं सांसारिक सुख की इच्छा करने वाले व्यक्ति को प्रयत्नपूर्वक गृहस्थाश्रम को धारण करना चाहिए क्योंकि निर्बल व्यक्ति में गृहस्थाश्रम को धारण करने की योग्यता नहीं होती।

संसार में सभी व्यवहारों का आधार गृहस्थाश्रम ही है। यदि गृहस्थाश्रम नहीं होता, तो धर्म-पूर्वक विवाह एवं संतानोत्पत्ति के अभाव में ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की कल्पना भी कैसे की जा सकती है? कुछ लोग यह कह सकते हैं कि संतानोत्पत्ति की भावना मनुष्यों में स्वाभाविक है और गृहस्थाश्रम एवं विवाह के बिना भी आपसी शारीरिक सम्बन्ध से संतानोत्पत्ति हो सकती है। लेकिन ऐसी स्थिति में सर्वत्र अव्यवस्था का साम्राज्य हो जाएगा। उत्तरदायित्व के अभाव में एक तरफ बच्चों को अनाथ की तरह जीना पड़ेगा तो वहीं दूसरी तरफ समाज में व्याभिचार की वृद्धि होने से स्त्रियों की हालत नरक से भी बदतर हो जाएगी। व्याभिचार के फलस्वरूप संताने भी निर्बल एवं अल्पायु होगी और वृद्धावस्था में कोई किसी की देखभाल करने वाला नहीं होगा। सारा मानव समाज नष्ट-भ्रष्ट होकर पशु समाज अथवा नरक में परिणत हो जाएगा। अतः विवाहपूर्वक संतोनोत्पत्ति से ही मानव समाज की रक्षा होती है जो सिर्फ गृहस्थाश्रम में ही सम्भव है। इसीलिए गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों एवं सुव्यवस्थित मानव समाज का आधार है।

निश्चित रूप से गृहस्थाश्रम की श्रेष्ठता सिद्ध है। लेकिन यह श्रेष्ठता तभी सुरक्षित रह सकती है और वैदिक स्वर्ग का आधार बन सकती है, जब स्त्री-पुरुष अर्थात् पति-पत्नी दोनों अपने-अपने कर्त्तव्यों का सम्यक पालन करने में तत्पर रहें। इसके लिए यह आवश्यक है कि विवाह के पूर्व लड़की एवं लड़के दोनों के रूप, गुण, कर्म, स्वभाव, ज्ञान एवं व्यवहार को सम्यक् मिला लिया जाय। साथ ही लड़की एवं लड़के की सहमति भी ले ली जाय। इसका प्रयोजन यह है कि विवाह के बाद उन दोनों में परस्पर विरोध न हो। यदि दोनों में विरोध होगा तो उन्हें ही दुःख होगा और आपस में सहमति रहने पर वे दोनों प्रसन्न एवं सुखी रहेंगे क्योंकि-**संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च। यस्मिनेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम॥** (मनु. 3.60) अर्थात् जिस कुल में पत्नी से पति एवं पति से पत्नी परस्पर संतुष्ट रहती हैं, उसी कुल में निश्चित रूप से कल्याण का निवास होता है। इसके विपरीत होने पर प्रभाव भी विपरीत ही पड़ेगा। इसलिए भारत में पहले स्वयंवर विवाह की प्रथा थी, जिसमें लड़का एवं लड़की दोनों को विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कर्मणा वर्ण एवं शरीर के अनुसार जीवन-साथी चुनने का अधिकार था। उनके गुण-कर्म-स्वभाव का मिलान ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति के कुछ पूर्व कर लेना चाहिए ताकि ब्रह्मचर्य की समाप्ति पर समावर्त्तन संस्कार के बाद विवाह संस्कार में असुविधा न हो अथवा दुःखदायी बेमेल विवाह न होने पाए।

विवाह के बाद संतानोत्पति के लिए नियम पूर्वक गर्भाधान संस्कार करना उचित है। गर्भ की स्थिति हो जाने पर पति-पत्नी को प्रयत्न पूर्वक संयमित जीवन जीना चाहिए, क्योंकि गर्भ में ही भावी संतान पर संस्कार पड़ने शुरु हो जाते हैं। महाभारत की यह घटना प्रायः सभी को विदित होगा कि अभिमन्यु ने गर्भ में ही चक्रव्यूह-भेदन की क्रिया को सीख लिया था। हुआ यों था कि जब अभिमन्यु गर्भ में था, तभी एक दिन अर्जुन द्रौपदी को चक्रव्यूह भेदन की क्रिया बतला रहे थे। सातवें द्वार के भेदन के समय द्रौपदी को नींद आ गई और वह सुन न सकी, जिसके कारण अभिमन्यु को छठे द्वार के भेदन तक ही ज्ञान हो पाया। इससे यह

www.thearyasamaj.org

सिद्ध होता है कि पुरुष एवं स्त्री के और विशेषकर स्त्री के कार्यकलापों का गर्भस्थ शिशु पर तद्नुरूप प्रभाव पड़ता है। इसलिए गर्भकाल में भावी संतान पर अच्छे संस्कार डालने के लिए चौथे महीने में पुंसवन एवं छठे-आठवें महीने में सीमान्तोन्नयन संस्कार करने का वैदिक विधान है। पुंसवन संस्कार बल एवं वीर्य की वृद्धि के लिए एवं सीमान्तोन्नयन संस्कार स्त्री को संतुष्ट एवं प्रसन्न रखने के लिए किया जाता है।

जब संतान का जन्म हो तो विधिपूर्वक जातकर्म संस्कार करना चाहिए। इसमें विशेष प्रावधान के अन्तर्गत संतान का पिता उसके कान में वेदोसीति शब्द बोलता है, जिसका अर्थ है कि तुम्हारा नाम वेद (ज्ञान) है और साथ ही सोने की शलाका को घी और मधु में डुबाकर संतान की जीभ पर 'ओ३म्' शब्द लिखता है। इसका महत्व यह है कि बच्चे को प्रारम्भ से ज्ञान की ओर प्रवृत्तत किया जाय ताकि आगे चलकर वह ज्ञान का उपासक बने। मधु, घी एवं सोने के प्रयोग का आशय यह है कि बच्चे के जीवन में घी एवं मधु की तरह बल एवं बुद्धिवर्द्धक भोजन एवं सोना यानी धन की पर्याप्त उपलब्धता बनी रहे। ओम् लिखने का तात्पर्य यह है कि बालिक ईश्वर-भक्त हो और ईश्वर को सदा याद रखे क्योंकि ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम है। इसीलिए यजु (40.15) में कहा गया है-ओमक्रतो स्मर अर्थात् है कर्मशील जीव तू ओम् का स्मरण कर जातकर्म संस्कार में इस तरह ओम् लिखने का विधान संतान को प्रारम्भ से ही इसी ओम् की याद दिलानी है। जन्म से कुछ दिन तक बच्चे एवं माता की विशेष देखभाल करनी आवश्यक है। बाद में यथासमय संतान का नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म (मुंडन) उपनयन एवं विघारम्भ संस्कार करना माता-पिता का कर्त्तव्य है ताकि बच्चे का सम्यक् प्रकार बौद्धिक एवं शारीरिक विकास हो और उसमें अच्छे संस्कार पड़े।

कहा जाता है कि परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला है। यहाँ से बालक के रूप में मनुष्य जो कुछ सीखता है, उसका संस्कार अन्त तक उसके साथ रहता है। बच्चे को सुसंस्कारित करने के लिए गृहस्थ स्त्री-पुरुष को पत्नी-पति तथा माता-पिता के रूप में अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करना भी आवश्यक है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को एक जीवन-साथी की आवश्यकता होती है। पति के लिए पत्नी उसका आजीवन मित्र होती है। पति के लिए पत्नी से बढ़कर और कोई मित्र नहीं होता। सच ही कहा है-**नास्ति भार्यासमो बंधुः (महा.शा. 144/16)** पति के हृदय में अपने इस जीवन मित्र के लिए अगाध प्रेम होना चाहिए। इस स्नेह-वारि के द्वारा सींचित परिवार रूपी बेल निरन्तर वृद्धि एवं कल्याण को प्राप्त करता है। मनु जी ने कहा है-

पितृभिर्भातृभिश्चैताःपरिभर्देवरैस्तथा॥
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुत कल्याणमीप्सुभिः॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।

मनु. 3.55.56

अपना कल्याण चाहने वाला पिता भाई, पति, देवर आदि को घर में स्त्रियों का वस्त्र-आभूषण द्वारा सत्कार करना चाहिए, क्योंकि जिस घर में स्त्रियों का सत्कार एवं सम्मान होता है, वहाँ दिव्य गुण युक्त पुरुषों का वास होता है और जहां पर इनका सत्कार नहीं होता, वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल एवं निरर्थक होती है। अतः पति का कर्त्तव्य है कि वह सदा पत्नी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करे और उसे संतुष्ट रखे।

पति-पत्नी गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं। गाड़ी ठीक से चले, इसके लिए आवश्यक है कि दोनों पहिए अपना काम ठीक-ठीक करे। जब पति अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो। पत्नी के कर्तव्य का वर्णन करते हुए मनुजी ने लिखा है-

नास्ति स्त्रीणां पृथक यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्।
पति शुश्रूयते येन तेन स्वर्गे महीयते॥

(मनु.5./155)

स्त्रियों के लिए पति से पृथक कोई यज्ञ, व्रत या उपवास नहीं है। केवल पति की सेवा से ही उसे स्वर्ग यानी सुख-विशेष की प्राप्ति होती है, क्योंकि 'सततं देववत् पतिः (मनु 5/154) अर्थात् पत्नी के लिए पति ही देवता होता है। स्त्रियों के और कर्त्तव्यों का वर्णन करते हुए महर्षि मनु से आगे लिखा है-

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्त हस्तया॥

(मनु. 5.150)

स्त्री सदा प्रसन्न मन से गृह-कार्यो को दक्षता पूर्वक सम्पन्न करे, उत्तम तरीके से गृह सज्जा करे और आय को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार

www.thearyasamaj.org

खर्च करे। प्राय: कटु एवं अप्रिय वचनों के कारण बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है। महाभारत की घटना को प्राय: सभी जानते होंगे। द्रौपदी ने दुर्योधन को अंधे का अंधा कहकर पुकारा था, जो दुर्योधन के साथ उसके पिता एवं द्रौपदी के श्वसुर धृतराष्ट्र के लिए अप्रिय एवं कटु शब्द था। इसी के प्रतिशोध में दुर्योधन ने पाण्डवों से वैर ठाना, जिसकी अन्तिम परिणति महाभारत के युद्ध के साथ भारतवर्ष के सर्वस्व विनाश के रूप में हुई। अत: वेदों ने पत्नी का कर्तव्य बतलाते हुए कहा-

जाया पत्ये मधुमतिं वाचम्वदतु शान्तिवाम्॥

(अथर्व 3.30.2)

पत्नी पति के लिए शान्तिदायक मीठी वाणी बोले। यदि पत्नी मीठी वाणी बोलेगी तो कोई कारण नहीं कि पति कटुवाणी का प्रयोग करेगा। जब पति-पत्नी दोनों मीठी वाणी वाणी बोलेंगे तो घर में प्रेम की गंगा प्रवाहित होती रहेगी और तब वे वेद के इस आदेश को चरितार्थ कर रहे होंगे-

इहेमाविन्द्र संनुद चक्रवाकेव दम्पति।

(अथर्व 14.2.64)

अर्थात् पति-पत्नी दोनों चकवा-चकवी की भांति एक-दूसरे से प्रेम करें।

लेकिन स्त्री-पुरुष सिर्फ पति-पत्नी ही नहीं होते, बल्कि माता-पिता भी होते हैं। इसलिए माता-पिता के रूप में भी उनका कुछ विशेष कर्त्तव्य है जो गृहस्थाश्रम को स्वर्ग में परिणत करने के लिए आवश्यक है।

गृह-प्रधान होने के कारण एक पिता का कर्त्तव्य है कि घर के सभी जनों पर समदृष्टि रखकर उनका पालन-पोषण करे। संतानो को अच्छी शिक्षा देकर संसार रूपी संग्राम में विजयी होने के लिए उन्हें योग्य बनाना भी पिता का एक विशेष कर्त्तव्य है। पिता के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए पुरुष में आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (7.60.1) में कहा गया है-

ऊर्ज विभ्रद् वसुवनि: सुमेधा अधोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
गृहानैमि सुमना वन्दमानो रमध्वं मा विभीत् मत्॥

मैं गृह-स्वामी शक्ति को धारण करता हुआ, धन को अर्जन करनेवाला, उत्तम धारणवती बुद्धिवाला, क्रोधरहित, स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखनेवाला, सुन्दर मनवाला और स्तुतिप्रधान जीवनवाला होकर इस गृहस्थाश्रम को धारण करता हूँ। हे गृहवासियों! मुझसे डरो मत, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक आनन्द से रहो।

अब हमें यह देखना है कि गृहस्थ पुरुष को पिता के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में ये गुण किस प्रकार सहायक होते हैं।

निर्बल व्यक्ति गृहस्थाश्रम के भार को वहन नहीं कर सकता है, जैसा कि **योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियै:** (मनु. 3.79) कहकर स्पष्ट किया गया है। अत: एक परिवार का पालन करने के लिए पिता में बल का होना आवश्यक है। इसलिए इस मन्त्र में पिता का पहला गुण शक्ति-धारण बतलाया गया है। केवल बल से ही गृह-पालन नहीं हो सकता है। इसके लिए धन भी अति आवश्यक है। धन के अभाव में गृहस्थ-जीवन की कल्पना भी दुष्कर है। इसलिए दूसरे गुण के रूप में पिता की वसुवनि अर्थात् धन का अर्जन करने वाला कहा गया है। गृह-जीवन में अनेक जटिल समस्याएँ आती रहती हैं। उसका समाधान उत्तम बुद्धि से ही सम्भव है। उत्तम बुद्धि मनुष्य की महती सम्पत्ति है। इसलिए तीसरे गुण के रूप में कहा गया कि पिता को उत्तम बुद्धिवाला होना चाहिए। एक पिता के व्यवहार में क्रूरता नहीं होना चाहिए। उसका मुखमंडल सदा सौम्य होना चाहिए। वह स्नेहपूर्ण दृष्टि से सबको देखे ताकि उसके पास घर के किसी सदस्य को आने में डर न लगे। इस मन्त्र के अन्त में मा विभीत् मत् शब्दों से पिता के इस गुण की ओर भी एक संकेत है। पिता का पांचवा गुण सुमना: अर्थात् उत्तम मनवाला है। एक पिता को अपने मन में कभी दुर्गुण एवं दुर्वासनाओं को स्थान नहीं देना चाहिए। ये मनुष्य को पतन के मार्ग पर ढकेलते हैं। मनुष्य जीवन पतन के एि नहीं, बल्कि उत्थान के लिए मिला है। एक पिता को यह सदा याद रखना चाहिए-**उद्यानं ते पुरुष नावयानम्** (अ.8.1.6) अर्थात् हे पुरुष! तू ऊपर उठने के लिए है, नीचे गिरने के लिए नहीं। संक्षेप में सुमना शब्द आत्म-संयम की शिक्षा देता है। पिता का छठा गुण वन्दमान है। एक पिता को स्तुति-प्रधान जीवन वाला होना चाहिए। उसका चरित्र ऐसा होना चाहिए कि उसकी सभी लोग प्रशंसा करें। उसे स्वयं भी किसी भी निन्दा नहीं करनी चाहिए।

www.thearyasamaj.org

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुंप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नज़फगढ
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
72. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

www.thearyasamaj.org

(गतांक से आगे)

अण्डे मांस मछली

- आचार्य चांद सिंह आर्य

5. चिकित्सकों की बात सुनकर भी बच्चे इस ओर आकर्षित होते हैं। 6. देश के राजनैतिक, जिन्हें हम देश के कर्णधार कहते हैं उनके द्वारा मांसाहार करना। कहा भी गया है यथा राजा तथा प्रजा। राम का मन्दिर बना नहीं रम के मन्दिर बना दिए। कृष्ण का मन्दिर बना नहीं, गौ मांस को पेट में चढ़ा गए। 7. मांसाहारी परिवारों में वैवाहिक सम्बन्ध होने से भी इस कुटेब का लगना स्वाभाविक है। 8. सेना में मांसाहार का प्रचलन होना भी मांसाहार को अत्यधिक बढ़ावा देने में सफल हुआ है। सैनिकों के अधिकतर परिवारों में इसका प्रचलन हो जाता है। 9. यवुकों में शरीर को ताकतवर बनाने की धुन सवार होती है। उनको विशेषकर खिलाड़ियों को अण्डे व मांस का सेवन करने की सलाह दी जाती है लेकिन उनको यह पता नहीं कि इनसे शरीर बनता नहीं बिगड़ता है। 10. विदेशियों की चाल किसी देश के युवकों को बर्बाद करना हो तो उनके आहार व साहित्य युवकों को बर्बाद करना हो तो उनके आहार व साहित्य को बिगाड़िए नौजवान आप बर्बाद हो जाएंगे और यही हो रहा है। किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है-

राष्ट्र नहीं होता विकासशील धन के भरे खजानों से।
राष्ट्र नहीं होता विकासशील मोटर कार विमानों से।।
राष्ट्र नहीं होता विकासशील विश्वसुन्दरी की शानों से।
राष्ट्र होता है विकासशील चरित्रवान् नौजवानों से।।

भारतवर्ष में बचपनकाल में ही विद्यार्थी अपनी पाठ्यक्रम की पुस्तकों में विद्यमान मांसाहार की पुष्टि से प्रोत्साहन लेते हैं। जो कि पाठ्यक्रम निर्माताओं के मस्तिष्क को विचारशून्य एवं अंग्रेजियत से पूर्ण तथा गुलाम होने को सिद्ध कर रहा है। दुःख इस बात का है कि अभी तक शिक्षा में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सका है।

अद्वितीय अखण्ड ब्रह्मचारी, तपोनिष्ठ योगी, वेदोद्धारक, सत्यार्थप्रकाश के रचियिता युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ही एकमात्र निर्भीक संन्यासी हुए हैं जो संसार में सत्य का पूर्ण मण्डन और असत्य का पूर्णतया खण्डन कर सके हैं। यदि देश में महर्षि के ग्रन्थों से वर्तमान पीढ़ी को पाठयक्रम के माध्यम से आत्मसात् नहीं करवाया गया तो नई पीढ़ी कभी भी भारतीय इतिहास व ज्ञान के सच्चे स्वरूप से परिचित नहीं हो सकेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बड़े दुःखी हृदय से लिखते हैं-''देखो मांसाहारी में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं किन्तु वे स्वार्थ स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करने में सदा तत्पर रहते हैं।''

''हे मांसाहारियो! तुम लोगों को जब कुछ काल पश्चात पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं?''

देखिए मांसाहार अमानवीय है क्योंकि मांसाहारियों व शाकाहारी प्राणियों की शरीररचना में अन्तर है। शरीररचना की दृष्टि से मनुष्य को ईश्वर ने शाकाहारी बनाया है। उदाहरण के लिए 1. मनुष्य के दांत व नाखून, नुकीले नहीं जैसे शेर, चीता, बिल्ली, कुत्ता आदि के होते हैं। 2. मनुष्य की आंत लम्बी होती है जबकि मांसाहारियों की आंते छोटी होती है। 3. मांसाहारी प्राणियों में शाकाहारी प्राणियों की अपेक्षा दस गुणा अधिक हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड होता है। जो मांस को पचाता है। 4. मांसाहारी प्राणी पानी को जीभ से उछालकर पीते हैं। जबकि शाकाहारी होठ लगाकर पीते हैं। 5. मांसाहारी प्राणियों की आँखें जन्म लेने के बहुत देर बार खुलती हैं जबकि मनुष्य आदि शाकाहारी प्राणियों के बच्चों की आँखें जन्म से ही खुलती है। 6. शाकाहारियों की लार में टाइनीन होता है जिससे श्रेतसार पचता है जबकि मांसाहारियों में मांस पचाने हेतु तेजाब होता है। 7. मांसाहारियों के पैर गद्देदार होते हैं, जबकि गाय, घोड़ा आदि के खुर होते हैं। 8. मांसाहारी प्राणी मांस कभी पकाकर नहीं खाते जबकि मनुष्य मांस को पकाकर खाता है। क्योंकि मसालों से दुर्गन्ध को दबा देता है और मसाले आदि की गन्ध में छिपे हुए मांस को अपने इस्पेक्टर (निरीक्षक) नाक को धोखा देकर जीभ तक पहुँचा देता है। 9. मांसाहारियों की त्वचा से पसीना नहीं आता बलिक वे जल्दी-जल्दी सांस लेकर जीभ को मुंह से बाहर निकालकर शरीर के तापमान को नियन्त्रण में रखते हैं जबकि शाकाहारियों की त्वचा से छिद्रों के माध्यम से पसीना आता है। 10. मांसाहारी जानवरों के शरीर से तीव्र दुर्गन्ध आती है। 11. मांसाहारी अपनी सन्तान को ही खा जाते हैं। 12.

www.thearyasamaj.org

मांस को देर तक नहीं रख सकते। ऐसा करने से यह सड़ जाएगा। गेहूं चना आदि कई वर्ष तक रखा जाता है।

अत: उपरोक्त विवरण से पता चला कि मनुष्य पूर्णतया शाकाहारी प्राणी है। इसमें मांसाहार का एक भी गुण घटित नहीं होता। इसके अतिरिक्त मांसाहार के अनेक भयंकर दोष हैं-

1. हिंसक प्रवृत्ति का बढ़ना। 2. मानवीय गुणों से रहित होना। 3. स्वार्थी बनना। 4. दया आदि सद्गुणों का लोप होना। 5. अन्यायकारी स्वभाव वाला बनना। 6. निर्बलों को सताना तथा सबलों के तलवे चाटनेवाला बनना। 7. अधिक दिनों तक मित्रता नहीं रख सकता। 8. मांस खाना वास्तव में चोरी और डकैती भी है। 9. मांसाहारी अनेक रोगों से ग्रस्ति रहता है। 10. मांसाहारी मनुष्य की आयु घटती है। जल्दी बूढ़ा हो जाता है। 11. बुद्धि का नाश होता है। 12. मांसाहारी मनुष्य तामसिक प्रकृतिवाला बन जाता है। 13. मांसाहारी मनुष्य के घर में कभी सुख-शान्ति नहीं रह सकती। उस घर में कलह, द्वेष, व्यभिचार, कामुकता, रोग, शोक, दरिद्रता, सन्तानसुख एवं इज्जत का सत्यानाश होगा। घर एक मन्दिर की बजाए श्मशानघाट बन जाएगा। 14. मांसाहार कामवासना को बढ़ाता है। 15. मानव चोले में पशु-चोले का खून मिल जाता है। 16. मांस को पेट तक पहुँचाने में भय बना रहता है। अत: यह कर्म अनुचित है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि जिस कार्य के करने से पूर्व भय, करते समय शंका और कर चुकने पर लज्जा आए वह कार्य अधर्म है, पाप है, अमानवीय है। 17. शाकाहारी प्राणी मांसाहारी की अपेक्षा अधिक बलिष्ठ होता है, जैसे हाथी, घोड़ा आदि। 18. मांसाहारी प्राणियों की जातियाँ निकृष्ट होती है। 19. मांसाहारी मनुष्य कभी परोपकारी नहीं हो सकता। 20. मांसाहार मनुष्य के शरीर के अनुकूल भोजन नहीं है। 21. मांसाहारी कभी प्रेम से नहीं रह सकते जैसे कुत्ते आदि।

कई व्यक्ति मुर्गा फार्म, सूअर फार्म व मत्स्य-पालन करके सोचते हैं कि हम तो उपरोक्त दोषों से मुक्त हैं क्योंकि हम स्वयं अण्डे-मांस-मछली का सेवन करते ही नहीं। परन्तु याद रखिए मनु महाराज लिखते हैं-

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय-विक्रयी।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातका:॥

अर्थात्- अनुमन्ता (मारने की आज्ञा देनेवाला), विशसिता (मांस काटनेवाला), निहन्ता (पशु को मारनेवाला), क्रय-विक्रय (प्राणियों को मारने के लिए मोल लेने और बेचनेवाला), संस्कर्त्ता (पकानेवाला), उपहर्त्ता (परोसनेवाला), च (और), खादक: (खानेवाला), इति घातका: (ये आठ प्रकार के सभी व्यक्ति हत्यारे और पापी हैं) अर्थात् अपराधी हैं, दण्डनीय हैं।

कई व्यक्ति अण्डे को शाकाहारी मानते हैं जो बिल्कुल असत्य है। अण्डा भी खाने की दृष्टि से अनेक प्रकार से घृणित पदार्थ है। उदाहरण के लिए अण्डे की उत्पत्ति पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि इसकी उत्पत्ति मुर्गी व मुर्गे के रज-वीर्य के संयोग से होती है। यदि यही वस्तु खाने योग्य है तो फिर वेश्यालयों की कचरा पेटी पर हाथ मारो। अण्डे से घृणित पदार्थ क्या हो सकता है। मुर्गी का भोजन देखिए अर्थात् बलगम, मल, कीड़े-मकोड़े आदि। यदि मनुष्य में थोड़ा भी मनुष्यपन बचा है तो इन बातों पर विचार करके जिन्दगीभर मांस अण्डे-मछली का सेवन तो दूर मन में सेवन करने के विचार को भी नहीं आने देगा।

जरा सोचिए-शाकाहार को संसार के समस्त जन करते हैं। एक भी मनुष्य ऐसा नहीं जो केवल मांस का ही सेवन करता है। इस प्रकार केवल शाकाहार करनेवाले संसार में अधिकतर हैं, तो सिद्ध हुआ कि मनुष्य शाकाहारी है। अत: शाकाहार ही मनुष्यजाति का भोजन हुआ। केवल मांसखाने वाला कुछ दिन ही जीवित रह सकता है। क्योंकि वह सृष्टिक्रम से मानव शरीर रचना के विपरीत सिद्ध होता है। अत: विचारपूर्वक मांस-भक्षण रूपी दुर्व्यसन पर चिन्तन करके अपनी जीभ पर विजय प्राप्त करो। विचार करके अपनाए गए कार्य मनुष्य की आत्मा में दृढ़ रूप से स्थिर हो जाते हैं। व्यक्ति वास्तव में मननशील होने से ही मनुष्य कहलाता है। वेद कहता है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बन और मांसाहारी में कभी मनुष्यपन नहीं हो सकता। इसलिए मांस-अण्डे व मछली आदि का सेवन पूर्णतया छोड़ने से ही हम मानव बन सकते हैं। मानव को मानव बनने के लिए सदा शाकाहारी होना चाहिए। अन्यों को भी समझाना चाहिए कि मांसाहार अमानवीय है, जानवरपना है और प्रकृति का उल्लघन है। प्रकृति का उल्लंघन करनेवाले को प्रकृति कभी क्षमा नहीं करती।

www.thearyasamaj.org

आओ आहार-विहार के रहस्य को समझें

- आचार्य रामसुफल शास्त्री

आहार का अर्थ भोजन विहार का अर्थ रहना-विचरणा यानि जिसका खान-पान, रहन-सहन, उठ-बैठ, विचरण करना आदि बिल्कुल ठीक है वह व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ व सुखी रह सकता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। जिसकी पाचन क्रिया ठीक है, खाया पिया हजम हो जाता है, पेट नर्म, हल्का व साफ रहता है, नींद अच्छी आती है, खुलकर भूख लगती है, यह भी प्रत्येक नर-नारी के लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। आईये प्रथम खान-पान पर थोड़ा चिन्तन और विचार करते हैं। भोजन के विषय में कई प्रश्न हैं कि-कब खायें? क्या खायें? कैसे खायें? वैदिक वाण्गमय में बहुत सुन्दर ढंग से इन प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।

पहना प्रश्न है कि कब खायें? इसका का उत्तर है ''**ऋतभुक**''- अर्थात् समय अनुसार ही भोजन करें। भोजन उचित स्थान पर श्रद्धापूर्वक बैठकर ही खायें। भोजन का एक सुनिश्चित समय भी होना चाहिए। भूख लगने पर ही भोजन करें, बिना भूख खाना न खायें। हो सके तो दिन में दो बार ही भोजन करें। बार-बार खाना स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता। ''ऋत'' का अर्थ पवित्र कमाई भी होता है। अर्थात् मेहनत की खून पसीने की कमाई खानी चाहिए। मुफ्त का भोजन ''अनृत'' (पाप) है, जो शारीरिक व मानसिक पीड़ा देता है।

दूसरा प्रश्न क्या खायें? ''**हितभुक**'' जो हितकारी हो, स्वास्थ्य के अनुकूल हो। जैसे घी, दूध, दही, फल, दाल, चावल, सब्जी, खीर, हलवा, मेवा, मिष्ठान आदि बढ़िया सुपाच्य भोजन ही खायें। भोजन हल्का गर्म (गुनगुना) हो। अधिक ठण्डा व अधिक गर्म दोनों ही हानिकारक हैं। बासी व ठण्डा कई-कई दिनों तक फ्रिज में रखकर नहीं खाना चाहिए। जहाँ तक हो सके दाल, सब्जियाँ आदि भोजन ताजा ही खायें। भोजन ग्रहण करने से पूर्व उचित-अनुचित का भली-भांति विचार करके सोच समझ कर ही भोजन खायें। मन को ललचाने न दें, इसको काबू में रखें। अदरक, नींबू, आँवला, लहसुन, हरी मिर्च, काली मिर्च, सफेद मिर्च, मेथी दाना, अजवाइन, सौंफ, काला नमक, सेंधा नमक, तुलसी एवं अंकुरित अन्न, चने, गेहूँ, मूँग, उड़द आदि का सेवन अत्यन्त लाभकारी है। इनमें औषधीय गुण होते हैं। तली-भुनी, बाजार की खराब चीजें न खायें। साफ-सुथरा, शुद्ध एवं साधारण भोजन खायें। भोजन में मीठा, खट्टा, नमकीन, तीखा, कड़वा, कषैला ये छः रस अवश्य होने चाहिए। गेहूँ चने एवं जौ का मिला हुआ आटा हो या फिर गेहूँ के आटे में थोड़ा बेसन जरूर मिला लें। अच्छा खाओ खुश रहो। जब कभी मजबूरी में पूरी-परोठे-समोसे-भटूरे आदि पकवान खाना पड़े तो ऊपर से चाय, कॉफी जरूर लें या फिर गर्म पानी एक दो घूंट ले लें। भोजन से पहले चाय, दूध, जूस आदि कोई भी पेय पदार्थ न पीयें एक घण्टा पहले पी लें।

तीसरा प्रश्न कैसे खायें? ''मितभुक'' अर्थात् भूख से थोड़ा कम खायें। कम खाना व गम खाना हितकारी होता है। भोजन को खूब चबा-चबा कर ही खायें। मुँह बन्द करके ही भोजन को चबायें। जल्दीबाजी में खाना नहीं खाना चाहिए। भोजन के समय केवल भोजन में ही ध्यान होना चाहिए। एकाग्र मन से पूर्ण शान्ति के साथ खाना खायें। भोजन के साथ पानी का प्रयोग न करें। कम से कम भोजन के आधा या एक घण्टे बाद पानी पीयें। ऋतु अनुकूल भोजन के साथ लस्सी का प्रयोग कर सकते हैं। क्रोध में, टी.बी. देखते हुए, अखबार पढ़ते हुए, खड़े होकर, चलते-फिरते, किसी से बातचीत करते हुए एवम् मोबाईल का प्रयोग करते हुए भोजन नहीं करना चाहिए। भोजन हमेशा प्रसन्नतापूर्वक ही खाना चाहिए। भोजन भी एक औषधि है इसे दवा के रूप में खायें। रोटी बनाने से लगभग आधा घण्टा पहले आटा गूँथ कर रख लेना चाहिए। पहले आटा गूँथने से रोटी अच्छी बनती है। भोजन के तत्पश्चात् लघुशंका अवश्य करना चाहिए, लाभ होता है, पेट में उष्णता नहीं रहती।

www.thearyasamaj.org

द्वितीय है विहार: अर्थात् रहन सहन (विचरण आदि) सोना-जागना, उठना-बैठना इत्यादि बहुत ही अच्छा होना चाहिए। जहाँ तक हो सके प्रात: 4 व 5 बजे के बीच जाग जायें, शैय्या छोड़ दें। जल्दी जागने के लिए जल्दी सोना भी जरूरी है, रात्रि 9 व 10 बजे के बीच अवश्य सो जायें, क्योंकि नींद भी शरीर की एक खुराक हैं, इसकी पूर्ति भी अति आवश्यक है। उठते ही ऊषापान करें, कम से कम 1 लीटर पानी बिना कुल्ला करे ही पीयें, भ्रमण करें शौचआदि से निवृत होकर सुबह खाली पेट जितना हो सके योग प्राणायाम व्यायाम करें। लगभग 1 घण्टा नित्य अपने शरीर के लिए समय अवश्य निकालें। व्यायाम के समय या गहरा लम्बा श्वास लेते हुए नाक से ही श्वास लें, मुँह से नहीं। वज्रासन मेढक कूद-ऊँची कूद, रस्सी कूट अत्यन्त लाभकारी हैं। मन्द गति से दौड़ना भी ठीक है।

ठीक ढंग से स्नान करें, जल्दी-जल्दी शरीर में पानी न डालें। अच्छी तरह स्नान करके शरीर को रगड़-रगड़ कर तौलिये से पोछें, शरीर में पानी न रहे। समय हो तो स्नान से पूर्व तेल मालिश जरूर करें। मालिश स्वस्थ्य का खजाना है। तेल मालिश करने के बाद कम से कम आधा घण्टा के बाद ही स्नान करें। सायंकालीन (रात्रि) भोजन के बाद भी भ्रमण अवश्य करना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार शाम अथवा रात्रि के भोजन के बाद कम से कम 100 कदम घूमना अनिवार्य बताया गया है। हाँ दोपहर के भोजन के बाद विश्राम करने का विधान है किन्तु वेद के आदेशानुसार **''दिवा मा स्वाप्सी:''** अर्थात् दिन में नहीं सोना चाहिए। केवल थोड़ी देर आराम तो कर सकते हैं, ताकि शरीर में स्फूर्ति बनी रहे। शरीर के साथ आत्मा व मन को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिए अपने इष्ट ''ओ३म्'' की नित्य उपासना करना भी अति आवश्यक है। अपना निवास स्थान घर-आँगन, साफ सुथरा रखना चाहिए। साफ सुथरी जगह में बीमारी नहीं फैलती। जीवन अनमोल है इसे उत्सव बना दो। सबसे प्रीति पूर्वक व्यवहार करें।

अनियमित आहार-विहार मनमर्जी से करते रहें और हस्पतालों के चक्कर भी काटते रहें। यह कोई जिन्दगी नहीं है। अच्छी संगति में रहे, अच्छे विचार सुनें, अपनों से बड़ों-अनुभवी व विद्वानों के पास ही बैठे उठे। हमेशा समय का सद् उपयोग करें। एक क्षण भी समय बर्बाद न करें। जो अपना काम समय पर और समय से पहले कर लेते हैं उनके पास कभी समय का अभाव नहीं रहता। अच्छा सोचे, अच्छे विचारों को ही ग्रहण करें। किसी कवि ने बहुत ही सुन्दर लिखा है कि उठते हैं विचार तो उठता है आदमी। गिरते हैं विचार तो गिरता है आदमी। यह सब विचारों का (मन की सोच) का ही तो खेल है। अत: विचारों की पवित्रता एवं अच्छी सोच के द्वारा जीवन को सरल से सरल बनाने की कोशिश करें। हर समय अत्याधुनिक कृत्रिम संसाधनों के ही सहारे न रहें। जहाँ तक हो सके कृत्रिमता का कम से कम प्रयोग करें। अपने आप को प्रकृति से जोड़े। खुली हवा का अधिकतम प्रयोग करें। महाशय वेगराज जी कहा करते थे कि 4 बजे की हवा। सौ रोगों की दवा। प्राण वायु ही जीवन का मुख्य आधार है। प्राण वायु के ठीक रहने से ही शरीर ठीक रहता है। श्वास-प्रश्वास की क्रिया अर्थात् नासिका के दोनों छिद्रों से श्वासों का संचार (आवागमन) निरन्तर ठीक प्रकार से होता रहे तो समझो कि शरीर में किसी भी रोग के आक्रमण करने की सम्भावना बहुत कम रहती है। जब तक प्राण सबल रहते हैं, तब तक शरीर स्वस्थ रहता है। प्राणों के कमजोर होते ही शरीर बीमारियों का घर बनने लगता है। जैसे किसी वाहन में हवा न हो तो आगे चलना सम्भव नहीं होता, वैसे ही प्राणवायु को शुद्ध व पवित्र बनाये रखने के लिए प्रत्येक गृहस्थी के घर में दैनिक यज्ञ (हवन) भी अवश्य होना चाहिए। बड़ी सुन्दर कहावत है कि-पहला सुख निरोगी काया। फिर दूजे हो घर में माया।।

विशेष नोट:- ऋषि-मुनियों एवम् आयुर्वेद की विशेष खोज के मुताबिक जो लोग भोजन के तुरन्त बाद रात्रि को सो जाते हैं वे कुछ समय बाद प्राय: मधुमेह (शुगर) के रोगी हो जाते हैं। विशेष रूप से युवा विवाहित स्त्री-पुरुषों को शुगर-मधुमेह से बचने के लिए यह सलाह दी जाती है कि वे भोजन के बाद कम से कम 3 घण्टे बाद ही सोयें।

- धर्माचार्य आर्य समाज सैक्टर-7 बी,
चण्डीगढ़, मो. 9416034759, 9466472375

www.thearyasamaj.org

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम

- अध्यापक छात्र से-हजार के बाद लाख फिर करोड़ फिर अरब आता है, अरब के बाद क्या आता है।
  छात्र-सर! अरब के बाद ईरान आता है।
- एक दुकानदार-ऐसी मंदी से तो मौत अच्छी। अचानक यमदूत आया और बोला-तुम्हारे प्राण लेने आया हूँ।
  दुकानदार-तो अब मंदी में आदमी मजाक भी नहीं कर सकता।
- नर्सरी के बच्चे ने परीक्षा सीट पर सु सु कर दिया अध्यापिका-तुमने ये क्या किया?
  बच्चा-मम्मी ने कहा था कि पहले जो आ रहा हो वही करना।
- अध्यापक-वास्को डी गामा भारत कब आया था
  छात्र-ठंड में
  अध्यापक-तुझे कैसे पता....?
  छात्र-मैंने फोटो देखी थी उसमें कोट पहना था उसने।
- संता-परसो बीबी कुए में गिर गई बहुत चोट लगी। बहुत चिल्ला रही थी
  बंता-अब कैसी है?
  संता-अब ठीक है कल से कुंए से आवाज नहीं आ रही।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता,
जिससे ठोकर लगे न कही।
पिता सुपथ की राह दिखावे
जिससे ठोकर लगे न कही।
जिससे वह झुके न कहीं।
पिता परमात्मा एक समान वेद देते हमको यही ज्ञान।
'कर्म ही पूजा' का उपदेश करे,
आलस प्रमाद करे न कहीं।।1।।

पिता स्वयं रूखा सुखा खावे, पौष्टिक खिला ता है संतान को।
पिता अपनी कष्ट कमाई का, एक रूपया भी खोता न कहीं।।2।।

पिता बसावे संतान को, भगवान बसाता जहान को।
लिखा पढ़ा के विद्वान बनावे, जिससे धोखा खाए न कही।।3।।

स्वयं फटे-पुराने पहिने, संतान के लिए नए सिलावे।
जिससे जाने अनजानेभी, वह अपमानित न होवे कही।।4।।

सेवा-सुश्रुषा करे जो पिता की, वह पाये मेवा सारे जगकी।
"यज्ञमुनि:" बैठ पिता चरणों, कहे स्वर्ग ओर न कहीं।।5।।

- स्वामी यज्ञमुनि:

एकता

रोज उठता है धुआं,
कोठियों से,
चिमनियों से, घरों से,
रंग सबका किन्तु काला
और काली नीति इसकी।
रंग इसका क्या बताता है जगत को
यदि चाहते हो उठना गगन में,
निकल जाओ,
झोपड़ियों से,
कच्चे मकानों से,
भवनों से
और एक हो जाओ
कि कोई फिर न पाए जान तुमको
तुम कहाँ से आ रहे थे,
तुम तभी ऊपर उठोगे।।

- ओम प्रकाश अडिंग

www.thearyasamaj.org

ध्यान क्यों नहीं लगता?

-देवराज आर्य मित्र

कुछ सज्जनों का कहना है कि सन्ध्या (ईश्वर भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान क्यों नहीं लगता इसका कारण है कि धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है तब ध्यान कभी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बनना पड़ता हैं। धारणा बनती है मन के द्वारा और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है तब मन मनमानी करने में स्वतन्त्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकर संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगाने का प्रश्न ही नहीं होता।

प्रिय बंधुओ! पहले बुद्धि को निर्मल करो! बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो! तामसिक भोजन से बचो जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो! आर्य पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो। मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपासना करनी आवश्यक है। धारणा जमते ही संभव है ध्यान लगाना जाएगा। जैसे प्यासे व्यक्ति की धारणा पानी प्राप्त करने की ओर ध्यान लगा देती है ऐसे ही ईश्वर भक्ति बनाने से ध्यान लग जाता है।

मैं उसको ढूंढ रहा हूँ

- कर्ण आर्य

मुसलमान और हिन्दू की जान
कहा है मेरा हिन्दुस्तान, मै उसको ढूंढ रहा हूं।

मेरे बचपन का हिन्दुस्तान
न बंग्लादेश न पाकिस्तान
मेरी आशा मेरा अरमान
वो पूरा का पूरा हिन्दुस्तान
मैं उसको ढूढ़ रहा हूँ....

वो मेरा बचपन को मेरा स्कूल
वो कच्ची सड़के वौ उड़ती धूल
लहकते बाग महकते फूल
वौ मेरे खेत वौ मेरा खालियान
मैं उसको ढूढ़ रहा हूँ।

वो मेरे पुरवो की जागीर
करायी लाहौर और कश्मीर
वो बिल्कुल शेर की सी तस्वीर
वो पूरा का पूरा हिन्दुस्तान
ये उसको ढूंढ रहा हूं।

यू भूखा शायर, प्यासा कवि
सिसकता चांद, सुलगता रवि
वो जिस मुद्रा में ऐसी छवि
कश दे अजमल की जलपान
मैं उसको ढूढ़ रहा हूं।

भगवान से झाड़ू की प्रार्थना

सबसे निकट वस्तु जो होती है वो मैं ही हूं मुझे झाड़ू कहते हैं हमारा काम घरों में मानव मात्र की सेवा करना है, घरों की सफाई करना हमारा मुख्य उद्देश्य है लेकिन हमें एक शिकायत है कि हम घरों की सफाई करते हैं, घर की गंदगी को निकालकर बाहर कर देते हैं, लेकिन हम इस घर के सदस्यों की मन की गन्दगी नहीं निकाल पाते। यह हमारी बदनसीबी है।

फिर भी हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी शक्ति दो कि हम घरों की सफाई के साथ हमें घर के इंसानों के दिलों की मैल भी निकाल सकें, क्योंकि आजकल इंसानों के दिलों में बेईमानी, भ्रष्टाचार झूठ फरेब आदि भरा हुआ है। हम सभी झाड़ू आपसे प्रार्थना करते हैं कि हम इंसानों के दिलों की गंदगी निकालने की शक्ति प्रदान करें, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद होगा।

- ऋषि राम कुमार, 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा)-122002

www.thearyasamaj.org

पंचांग के गुलाम

-ठाकुर विक्रम सिंह

'आज शुक्रवार के दिन नई झाड़ू क्यों निकाली, बहू? तुमको कई बार समझा चुकी हूं, पर तुम तो इस घर को भरा-पूरा देखना ही नहीं चाहती।'

'माजी, मैं अपने घर की उन्नति क्यों नहीं देखना चाहूंगी? आपने शुक्रवार को झाड़ू खरीदने के लिए मना किया था। मैंने सोचा, घर में रखी नई झाड़ू को काम में लेने से शायद कोई हर्ज नहीं होगा,' प्रमिला करीब-करीब रोते हुए बोली।

'लो, अब रोना शुरु कर दिया। बहू, शुक्रवार और मंगलवार तो देवी के दिन हैं। तड़के उठकर, नहा-धोकर देवी की स्तुति में अन्नपूर्णाष्टकम् या सौन्दर्यलहरी गाना तो दूर रहा, अब आती हुई लक्ष्मी को भी दूर भगा दे।

प्रशांत आधी रात को देर से लौटा था और चाहता था सुबह देर से उठे, पर मांजी के चिल्लाकर बोलने से वह एकाएक जाग उठा। आंखे मलता हुआ वह वहीं पहुंच गया। उसे देखकर माजी का स्वर मुलायम पड़ गया।

अच्छा-अच्छा, अब जल्दी से स्नान कर ले। गलती तो इंसान से हो जाती है। मैं बड़ी हूं तो किसलिए? यदि मैंने आज तुम्हें नहीं बताया तो सब यही कहेंगे कि देखो सास के होते हुए भी बहू को कुछ नहीं सिखाया गया।' फिर आवाज को थोड़ा धीमा करते हुए बोलीं, 'मां न बताये तो कोई दोष नहीं देगा।'

माजी हमेशा से ही अन्धविश्वासी रही हैं। पिताजी जब दफ्तर जाने के लिए घर से बाहर निकलते तो मांजी दरवाजे पर खड़ी होकर बराबर देखती रहती थी। कौआ दाएं से बाएं उड़ा या बायें से दायें, बिल्ली ने रास्ता काटा या सीधी चली गई, सामने से कोई लकड़ी वाला आया या खाली घड़ा लिये हुए? उस समय तो पिताजी इसे अपने ऊपर पत्नी का असीम प्यार और पतिभक्ति ही समझते रहे। दोनों बहनें भी मां की देखा-देखी यह सब सीख गई। उनका मन में इन बातों का पैठ जाना स्वाभाविक था।

बड़ी दीदी के पहले प्रसव का तमाशा प्रशांत को अभी तक याद है। दीदी को तकलीफ शुरु हुई थी जो माजी ने पंचांग उठा लिया। अगले कुछ ही घंटों के बाद रोहिणी नक्षत्र का आगमन होना था। बस उन्होंने दीदी को अस्पताल ले जाने की जल्दी मचानी शुरु कर दी। पिताजी बोले, 'भई अभी तो दर्द ऐसा नहीं है कि उसे फौरन अस्तपाल ले जाया जाये। अस्पताल तो पास ही है। पर मां तो कुछ और ही शंका के कारण परेशान थी। उनका कहना था कि कुछ घंटो के बाद रोहिणी नक्षत्र का उदय होगा। रोहिणी में लड़का पैदा हो तो मामा का दुश्मन होता है। कृष्ण जी ने भी रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिया था इसलिए उन्होंने मामा कंस का संहार किया था। पिताजी जी भर के हंसे। बड़ी मुश्किल से हंसी रोककर बोले, 'अरे भई, यदि उसे अस्पताल ले जाने से ही बच्चा तुम्हारे मनचाहे समय में हो जाये तो सब अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार अस्पताल न चले जायें? तुम हर काम के लिए समय निर्धारित कर सकती हो, पर जीवन और मृत्यु का समय तुम या तुम्हारा पंचांग निर्धारित नहीं कर सकता।' मां कुछ बोलतीं, उससे पहले ही वह गंभीर होते हुए बोले, 'कंस ने जो अत्याचार किये थे उसकी सजा तो उसे मिलनी ही थी। कृष्ण जी तो एक जरिया बन गये थे।'

पर माजी नहीं मानी और अमृतयोग, सिद्धयोग आदि देखकर दीदी को अस्पताल ले गई। डॉक्टरनी से भी जल्दी-जल्दी करने को कहने लगीं। डॉक्टरनी हंसकर बोली, 'मांजी, इतनी उतावली है आपको नानी बनने की? नया जीव तो अपने समय से ही धरती पर आयेगा। वैसे भी अभी जल्दी आने के आसार नहीं हैं।'

डॉक्टरी अन्य मरीजों के काम में लगी रही। मांजी ने दो-तीन बार फिर टोका। अब तो वह चिढ़ गई, 'आप बाल-बच्चे वाली होकर भी अनुभवहीन व्यक्तियों की तरह क्यों बातें कर रही हैं? इससे तो अच्छा है कि आप अपनी बेटी को कहीं और ले जायें।'

प्रशांत के भानजे को रोहिणी नक्षत्र में पैदा होना था सो वही हुआ। पिताजी और वह दूध लेकर पहुंचे तो मांजी ने प्रशांत को बाहर ही रोक दिया। उनका कहना था कि यदि वह बच्चे को देख लेगा तो उसके लिए हानिकारक होगा। ग्यारहवें दिन ब्राह्मण आकर जब 'स्वस्त्ययन' कर ले तब कहीं वह अपने नन्हे भानजे को देख सकता है। प्रशांत का सारा उत्साह खत्म हो गया। पिताजी भी गुस्से में आ गये। पर समय ही ऐसा था कि अधिक बहस करना ठीक नहीं था।

पिताजी माजी की कई बातों की हंसी उड़ाते थे पर गंभीर रूप से कभी नहीं टोका था। पर इस घटना के बाद तो उनको इन खोखले विचारों पर इतना गुस्सा

www.thearyasamaj.org

आने लगा कि उन्होंने माजी की इन बातों की परवाह करना ही छोड़ दिया। अकसर पिताजी और माजी में इन बातों को लेकर झगड़ा हो जाता। कभी-कभी गुस्से में पिताजी बिना भोजन किये ही दफ्तर चले जाते। माजी भी उस दिन बिना खाये रहती। शाम को पिताजी के लौटने पर अन्न अपमान न करने की दुहाई देकर उन्हें जबरदस्ती खिलातीं, फिर खुद खातीं।

पिताजी भी भूख से बेहाल तो होते ही थे। अत: थोड़े से नानुकर के बाद मैं खा लेते। हर बार माजी के विचारों को बदलने के लिए दिल को कड़ा करने पर भी माजी के झक्कीपन के आगे उनकी एक न चलती। भाई-बहन भी पिताजी का पक्ष लेते पर माजी के विचारों में तिल बराबर भी फर्क न पड़ता। माजी रोते-रोते पिताजी से कहतीं, 'नास्तिक मत बनो, अगले जन्म का भी कुछ ख्याल करो।' पिताजी दु:ख और लाचारी से हंसते हुए कहते, 'यह जन्म तो तुमने इन ढकोसलों के चक्कर में खराब कर ही दिया है। अगले जन्म की अब किसे इच्छा है? पर एक बात याद रखना, मेरी मृत्यु पर यह दिखावा हरगिज न हो। मेरी वसीयत में लम्बी-चौड़ी जायदाद सम्पत्ति के बंटवारे का लेखा-जोखा तो नहीं होगा, पर यह इच्छा जरूर जाहिर कर दूंगा कि मेरा क्रियाकर्म अत्यन्त साधारण तरीके से हो। ये ब्राह्मण और पंडित तो तुम्हें लूटेंगे और तुम जैसे लोग लुटने में ही अपनी शान और जन्म का सार्थक होना समझते हो।' माजी ऊंची आवाज में रोने लगीं, 'मैं तो सबके भले के लिए इतना करती हूं और आपके मुंह से सिवा अपशकुन के और कुछ निकलता ही नहीं है। आप ही यदि इस तरह की बातें करेंगे तो ये बच्चे क्या खाक मेरी बात पर ध्यान देंगे?

'मैं तो तुमको बदल नहीं सका। शायद ये बच्चे तुम्हारे विचार बदल सकें।' कुछ ही दिनों बाद पिताजी की सचमुच मृत्यु हो गई। लगातार दिल के दो दौरे पड़े और वह चल बसे। पिताजी को भी शायद अंदाज नहीं था कि उनकी मृत्यु इतनी अप्रत्याशित और शीघ्र होगी। वरना शायद वह वसीयत में अन्तिम इस इच्छा को लिख जाते। माजी की इच्छा को देखते हुए परिवार वालों को पिताजी की मृत्यु पर सारे रिवाजों को मानना पड़ा। पिताजी से बहस करने या कुछ कहने-सुनने का मौका न था, न किसी का दिमाग संतुलित था। पिताजी की अचानक मौत ने दोनों भाईयों को हिला दिया था। फिर नाते-रिश्तेदार ऐसे समय में काम न आयें, यह भी कोई बात हुई भला। सब अपनी-अपनी जानकारी के अनुसार मरणोपरान्त रीति-रिवाजों पर रोशनी डाल रहे थे। गोदान से स्वर्णदान तक जितने प्रकार के दान हो सकते हैं वे सब माजी के कहने पर किये गये।

बड़े भैया प्रशान्त से बोले भी, 'भाई, यह सब क्या हो रहा है, इतना खर्च मैं कैसे बर्दाश्त कर सकता हूं? इन सबके बिना पिताजी की आत्मा को क्या शांति नहीं मिल सकती? हमें अपनी जेब भी तो देखनी चाहिए।'

प्रशांत बेचारा क्या कहता? वह भी जानता था कि भैया को इतना वेतन नहीं मिलता कि अन्टशन्ट पैसा खर्च कर सकें। भैया धीरे से एक-दो बार प्रशान्त से बोले भी कि मां के पास कुछ रूपये हों तो पूछ लो पर न प्रशांत की हिम्मत हुई, न भैया की। ऐसे समय में माजी से पूछना खराब लगता। नाते-रिश्तेदार भी क्यों चूकते? वे जरूर कहते, 'ऐसे समय भी लड़के काम न आयें तो क्या फायदा इन लड़कों के होने का।' भैया ने पता नहीं कहां से उधार लेकर पिताजी को 'स्वर्ग' पहुंचाने का सारा इंतजाम कर दिया। वह तो अच्छा हुआ कि प्रशांत को जल्दी अच्छी नौकरी मिल गई और दोनों भाईयों ने मां और छोटी बहन का भार आपस में बांट लिया।

प्रशांत की शादी में उर्मिला के पिता ने बेटी व दामाद को कश्मीर जाकर कुछ दिन बिताने के लिए अलग से चैक दिया था। प्रशान्त को मुश्किल से 15 दिन की छुट्टी मिली। फिर भी वे दोनों खुश थे कि कम से कम एक दूसरे को समझने का कुछ तो मौका मिलेगा। प्रमिला ने बड़े चाव से तैयारी की। प्रशांत ने टिकट बुक कराकर जब मांजी को बताया तो वह पंचांग लेकर बैठ गई। अष्टमी, नवमी, दिशाशूल और ने जाने क्या-क्या कहकर उनकी जाने की तारीख 3 दिन आगे करवाने को कहने लगीं। वहां से आने की तारीख भी ऐसी बता रही थी कि या तो प्रशान्त अपनी पत्नी को लेकर निश्चित तारीख से तीन-चार दिन पहले लौटे या फिर दो-तीन दिन बाद। छुट्टी तो उसकी बढ़ नहीं सकती थी। पन्द्रह दिन में छह-सात दिन की कटौती अखरने वाली थी। फिर कारण भी तर्कसम्मत नहीं लग रहा था। प्रशांत ने मां की बात को हंसी में टालना चाहा। बुक किये टिकटों को रदद् करवाकर किसी और दिन का लेना भी कम इल्लत का काम नहीं था। प्रमिला को बुरा लगना स्वाभाविक था। उसने माजी के सामने ही कह दिया, 'न ही जायें तो अच्छा। इतने पैसे केवल छह-सात दिन के लिए खराब करने की क्या जरूरत है?' पहले माजी भी उसकी बात का सही अर्थ

www.thearyasamaj.org

समझकर बोलीं, 'हां बहू, और नहीं तो क्या? पहले कहां शादी होते ही मियां-बीबी हनीमून मनाने जाते थे? इतने पैसों को सोने जेवर और साड़ियों में लगायें तो शान ही कुछ और हो जाये।' प्रमिला अपना पासा उलटा पड़ता देख जल-भुन गई थी और आंसू भरी आंखों से थोड़ी देर सास को देखकर अन्दर कमरे में चल दी थी। उसकी उलाहने वाली दृष्टि देखकर माजी समझ गई थी और प्रशांत से बोली थीं, 'भाई, तुम लोगों की जो इच्छा हो करो मैं तो तुम दोनों की भलाई के लिए ही कहती हूं। मैं ठहरी पागल बुढ़िया पढ़ी-लिखी बहू को क्या बता सकती हूं?'

प्रशांत बेचारा क्या करता? पत्नी के आगे न मां का काम घटा सकता था और न मां की ऊटपटांग बातें मानकर पत्नी को नाखुश कर सकता था। किसी तरह प्रमिला को मनाकर मां की कही तारीख पर वे निकले, लेकिन लौटे तो खुद की तय की हुई तारीख पर ही। घर आकर माजी से उन्होंने बहाना बना दिया कि उधर नहीं लाइन पर ट्रेन उलट गई इसलिए गाड़ियां ठीक से नहीं चल रही थी। बस, माजी ने दोनों की नजर उतारी और बोलीं, 'देखा न, यदि दिन देखकर न जाते तो न जाने क्या अनर्थ हो जाता।' प्रमिला और प्रशांत यह सुनकर दबी नजरों से एक-दूसरे को देखकर मुस्करा दिये थे।

समय बीतता रहा और समय के साथ प्रमिला भी समझ गई कि घी सीधी उंगली से नहीं निकलेगा। प्रशांत और उसके बीच समझौता हो गया और वे दोनों खुश रहते हुए माजी को नाराज न करने की कोशिश करते। वैसे छुटपुट बहस और तीनों में से एक का नाराज होना चलता रहता। पर इतनी नौबत कभी न आई कि एक-दूसरे के मन में कड़वाहट भर जाये। पर पिछले कुछ महीनों से प्रमिला उखड़ी-उखड़ी सी रह रही थी और माजी के प्रति लापरवाही दिखा रही थी। बात ही ऐसी थी कि किसी का भी दिल वितृष्णा से भर जाता। हुआ यह कि बड़े भैया के तीसरे लड़के को अपैंडिक्स का तेज दर्द हुआ। डॉक्टर ने कहा कि लड़के को बचाना है तो उसका तुरन्त ऑपरेशन कराना होगा। पर माजी पंचाग लेकर अपना राग अलापने लगीं, फलां दिन अच्छा है और फलां दिन में फलां समय ऑपरेशन करना उत्तम रहेगा। उनकी इस गणना से अमूल्य समय नष्ट होता जा रहा था। आखिर ऑपरेशन से पहले ही लड़का इस दुनिया से कूच कर गया। डॉक्टर ने माजी पर हिकारत भरी नजर डाली और दांत पीसते हुए बोला, 'आप ही इसकी खूनी हो।'

भैया-भाभी मुंह से कुछ न बोले, पर मांजी के प्रति उनका व्यवहार एकदम रूखा हो गया। वे जल्दी ही दूसरी जगह चले गये। तभी से प्रमिला के मन में उनके प्रति घृणा बढ़ने लगी। उस दिन स्नान घर में जाकर प्रमिला सोच में पड़ गई वरन सोच में डूब गई। आखिर में उसने पिता के घर जाने का फैसला कर लिया। वह अपने बच्चे को इन सड़ी-गली मान्यताओं के वातावरण से बचाना चाहती थी। इसलिए उसने अपने बच्चे को अपने नाना के यहां भेज दिया था। प्रशान्त और माजी ने उसे खूब मनाया। और इस पर वह बोली, 'यदि मांजी का रूख इसी तरह का रहा तो मैं शायद यहां कभी न आऊं। बड़ों का आदर तभी किया जा सकता है जब उनके विचार उदार और हृदय विशाल हों। यहां तो हमारी जिन्दगी सिर्फ पंचांग के अंदर सुरक्षित है। असली जिन्दगी तो वह है जिसे हम मर्यादापूर्वक अपनी खुशी से जिएं और दुख के समय हिम्मत न हारें। यदि पंचांग देख-देखकर ही कार्य करेंगे तो फिर दुख तो आयेगा ही नहीं। इसको मनुष्य की निश्चिन्तता कहा जा सकता है या डरपोक और दब्बूपन।'

फिर माजी और प्रशान्त के पैरों की धूल माथे पर लगाते हुए बोली, 'वैसे मुझे माजी से कोई शिकायत नहीं है। मुझे चिढ़ है तो उनकी सड़ी-गली मान्यताओं से। मैं नहीं चाहती कि इसका विष हमारे बच्चे में भी घर कर जाये।' वह सूटकेस उठाकर चलने लगी। प्रशान्त को होश आया। उसने सूटकेस प्रमिला के हाथ से ले लिया और उसके आगे हो गया। दो कदम चलकर माजी की ओर देखा और बोला, मां मैं इसे गाड़ी में बिठाकर आता हूं। बस, फिर मैं ही रह जाऊंगा तुम्हारे साथ। रोज पंचांग देख-देखकर दफ्तर भेजना। पर पहले यह बता दो कि मेरा मरणयोग कब....।'

प्रमिला ने दौड़कर अपनी हथेली से उसका मुंह बंद कर दिया। माजी फफककर रोने लगीं। थोड़ा रोना रूक जाने पर प्रमिला का आंचल पकड़कर बोलीं, 'बटी, मुझे पगली समझकर माफ कर देना। एक बेटे को पुत्रशोक का दुःख दिया। अब दूसरे के घर को बर्बाद करने का कारण नहीं बनूंगी।' प्रमिला और प्रशान्त स्तब्ध खड़े माजी को देख रहे थे। माजी तेजी से अन्दर गई। और यह क्या, उनके हाथ में फिर पंचांग था। प्रमिला बिदकती तभी वहां एक और दृश्य उपस्थित हुआ। माजी ने पंचांग को फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे पर चेहरे पर हंसी थी।

www.thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री आनन्द कुमार जी गुप्ता शालीमार बाग, दिल्ली	10000/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	5600/-
श्री अमरीश जी झाम सु. श्रीमती कृष्णा जी झाम, गुरुग्राम,हरि	5000/-
आर्य केन्द्रिय सभा गुरुग्राम हरियाणा	3100/-
श्री सागर पुनिया किला मोहल्ला, बहादुरगढ़	3100/-
श्रीमती रामदुलारी जी बंसल रोहिणी दिल्ली	2000/-
श्री स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी पुण्डरी कैथल	2100/-
आर्य केन्द्रीय सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली	2100/-
श्री सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़	1900/-
श्री आजाद सिंह ओहल्याण सुपुत्र श्री छोटूराम गढ़ी सांपला रोहतक, हरियाणा	1111/-
श्रीमती अंगुरी देवी जी जैन माडल टाऊन, बहादुरगढ़	1100/-
श्री अशोक कुमार जी जून नूना माजरा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हरीराम जी भृगु नई बस्ती, बहादुरगढ़	1000/-
श्री पंकज जी दहिया सैक्टर-9, बहादुरगढ़	510/-
श्री लक्ष्य मलिक वेदान्त नगर बहादुरगढ़	500/-
श्री मा. तिलकराज जी सन्त कॉलोनी बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती मंजू देवी जी आर्या धर्मपत्नी श्री वजीर सिंह जी कालवा जिन्द	500/-

विविध वस्तुएं

डिलाईट फर्नीचर 2000, 46 झांसी रानी रोड, कुकरेजा हाऊस
स्वास्थ्य शिविर कैम्प हेतु दवाईयां आई (9834/- रूपये)

फरिश्ता सांप एण्ड चरखा कै. फैक्ट्री दिल्ली
25 पैकेट सरफ, 200/- रूपये

श्रीमती कलारानी जैन आत्मशुद्धि एन्कलेव, बहादुरगढ़	बैग 26
श्री दीपेन्द्र डबास शनि मन्दिर टीकरी, दिल्ली	1 टीन सरसों तेल
श्री नैनपाल मन्दिर शुक्ला जी टीकरी दिल्ली	1 टीन सरसों तेल

श्री महावीर जी जेई परिवार द्वारा हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी बहादुरगढ़
एक समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त

श्री रमन नरूला सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/
श्री सतीश जी वर्मा ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री सुधांशु चावला, सैक्टर-4, गुरुग्राम हरियाणा	500/-
श्री समुन्द्र पाल डबाल धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-

जीवनोपयोगी संदेश

- किसी ने मुझसे पूछा-कैसे हो? मैंने कहा-मित्र! जिन्दगी में गम हे, गम में दर्द है, दर्द में मजा है, और मैं मजे में हूँ।
- प्रसन्न व्यक्ति वह नहीं है, जो कुछ निश्चित परिस्थितियों में रहता है। बल्कि वह है, जो निश्चित दृष्टिकोण रखता है, परिस्थिति जो भी हो।
- यदि जीवन में आन्नद चाहते हों तो दिमाग को ठंडा, वाणी को मधुर और शरीर में न्याय का आचरण रखें। याद रहे-'ईश्वर न्यायकारी है।'
- खुशनसीब वह भी है, जिसका नसीब खुशी देने वाला हो, और खुशनसीब वह भी है, जो अपने नसीब पर खुश हो। पुरुषार्थ से खुशनीब बनें।
- हम उत्तम संस्कारों वाले और अपने संस्कारों वाले पैदा हुए थे, ऐसे ही मरेंगे। कोई हमें पसंद करे या न करे, किसी को खुश करने के लिए हम पैदा नहीं हुए।

श्री ईमरीश जी झाम गुड़गांव सुपत्री श्रुति झाम के साथ यज्ञ प्रार्थना करते हुए। पूज्य माता कृष्णा झाम द्वारा आश्रम के बच्चों के लिए टेलीविजन, डी.वी.डी., स्पीकर, गद्दा, रजाई, बिस्किट एवम् मूंगफली दान स्वरूप में दिया।

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जनवरी 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

www.thearyasamaj.org

श्री सुभाष कालड़ा जी, सैक्टर-14, गुडगांव परिवार को स्मृति चिन्ह एवम् पित वस्त्र द्वारा सम्मानित करते हुए।
द्वितीय चित्र में कालड़ा परिवार को आशीर्वाद देते हुए स्वामी धर्ममुनि जी, श्री कन्हैया लाल जी आर्य श्री सत्यानन्द जी आर्य आदि।

यजमान परिवार को स्मृति चिन्ह एवम् पितृ वस्त्र द्वारा सम्मानित करते हुए।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

यजमान परिवार यज्ञ करते हुए। द्वितीय चित्र में श्री भगतसिंह जी, श्रीमती सुरेखा देवी तिहाड़कलां कला, सोनीपत द्वारा अपने सुपुत्र आयुष्मान मुदित के ९वें जन्मदिवस पर आश्रम के बच्चों को जर्सियां देते हुए।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

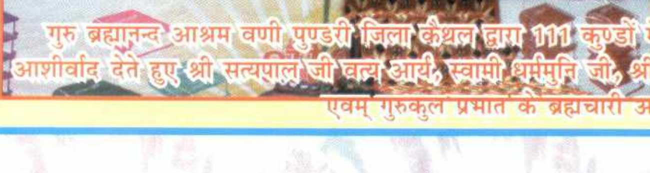

गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम वणी पुण्डरी जिला कैथल द्वारा 111 कुण्डों में राष्ट्र भृत महायज्ञ के अवसर पर यजमानों को आशीर्वाद देते हुए श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री स्वामी बलेश्वरा नन्द जी, श्री राजपाल जी बहादुर एवम् गुरुकुल प्रभात के ब्रह्मचारी आशीर्वाद देते हुए।

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
जनवरी 2017
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

दोनों आश्रमों के 2017 में आयोजित योगशिविर एवं यज्ञोत्सव कार्यक्रम आत्शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में

(1) निःशुल्क ध्यानयोग शिविर एवं बृहद्‌यज्ञ 27 मार्च सोमवार से 2 अप्रैल रविवार तक।

(2) निःशुल्क ध्यान योगशिविर एवं बृहद् यज्ञ 26 जून सोमवार से 2 जुलाई रविवार तक।

(3) आश्रम का स्वर्णजयन्ति महोत्सव 1 सितम्बर शुक्रवार से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आरम्भ 2 अक्टूबर सोमवार 51 कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति। इस शुभावसर पर विविध सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा और भव्य स्मारिका का प्रकाशन होगा। आप सभी से निवेदन है कि स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभा बढ़ाएं और कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित करें।

(4) पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज दोनों आश्रमों के मुख्यधिष्ठाता के 82वें जन्मदिवस पर बृहद्, यज्ञ एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन 20 नवम्बर सोमवार को विशाल स्तर पर किया जाएगा।

फर्रूखनगर आश्रम में-प्रत्येक मास के द्वितीय रविवार को यज्ञ सत्संग का आयोजन किया जाता है और स्कूल कॉलेजों, ग्रामों में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविरों की व्यवस्था की जाती है। इच्छुक स्कूल कॉलेजों के अधिकारी सम्पर्क करें तिथियां निश्चित कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र-9416126977, 8199926977।

दोनों आश्रमों में-योग्य विद्धानों पुरोहितों द्वारा यज्ञों संस्कारों के लिए उत्तम व्यवस्था है। आप सम्पर्क कर आमन्त्रित कर सकते हैं-

मो. 9416054195, 9896578062 (बहादुरगढ़)